दोहा

केवल ज्ञानीको सदा, वन्दु ये कर जोड़ ॥
गुरु मुख से धारण करो, अपनी ज़िद् को छोड़ ॥ १ ॥
जिन वचन तह मेवसत्य, समभाव नहीं ताण ॥
जतना से वांचो सही, येही प्रभू की वाण ॥ २ ॥

॥ सुचना ॥

ये पुस्तक जतना से रखये।

उघाडे मुंह तथा चिराग के चानणे नहीं वांचे पद, अक्षर, ओछो, अधिको, आगो, पाछो, तथा कानो मात, मिंडी, ह्रस्व, दीर्घ वगुद्ध टुटी भापामें लिख्यो हुवो विद्वान कृपा कर शुधार लेवें प्रसिद्ध कर्ताको येही नम्र विनन्ति है।

सब्वे सासतरा (सव शास्त्र) माने समकित मोहनी किस को कहते हैं ? गुरु ऊपर स्नेहभाव रक्खे जैसे गौतम स्वामीने महावीर प्रभुपर रक्खा अथवा सुक्ष्म पदार्थ में शंका वेदे (जाणे) सात प्रकृति का भांगा नव पहिले भांगे चार प्रकृति को क्षपावे तीन को उपसमावे दुसरे भांगे पांच प्रकृति को क्षपावे दोको उपसमावे तीसरे भांगे छव प्रकृति को क्षपावे एकको उपसमावे इन तीन ही भांगे को क्षयोपसम समकित कहेना चोथे भांगे चार प्रकृति को क्षपावे दो को उपसमावे एक को वेदे पांचवें भांगे पांच को क्षपावे एक को उपसमावे एक को वेदे इन दो भांगोंका क्षयोपसमवेदक समकित कहते हैं छटा भांगामें छे प्रकृति को क्षपावे एक को वेदे उसको क्षायकवेदक समकित कहते हैं। सातमें भांगे छव प्रकृतिको उपसमावे एक को वेदे उसको उपसमवेदक समकित कहते हैं। आठमें भांगे सात प्रकृति को उपसमावे उसको उपसम समकित कहते हैं। नवमें भांगे सात प्रकृति को क्षपावे उसको क्षायक समकित कहते हैं। चोथे गुणस्थान आया हुवा जीव जीवादिक नो पदार्थका जानकार होवे। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का जाणकार होवे नवकारसी आदि वरसी तप जाणे, सर्दहे, परुपे, परन्तु कर सके नहीं क्योंकि अविरति सम्यक्त्वदृष्टि है। तिवारे श्री गौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वंदणा नमस्कार करी श्री भगवंत प्रत्ये पुछता हुवा हो स्वामीनाथ ! इस जीवको क्या गुण हुवा ? तिवारे श्रीभगवंतने कहा। हो गौतम पूर्वे आयुष्यको बंध नहीं पड्यो होवे तो सात बोलको बंध नहीं पड़े १

१० मिथ्या दंसण वत्तियाका दो भेद।

१ उणा इरित मिथ्यादंसण—ओछा, अधिका सर्दहे तथा परूपे उसकी क्रिया लागे।

२ तवइरित मिथ्यादंसण—विपरीत सर्दहे तथा परूपे उसको क्रिया लागे।

११ दिट्ठिया क्रियाका दो भेद देखनेसे राग द्वेष पैदा होवे।

१—जीव दिट्ठिया—घोड़ा, हाथी, वगैरा ने देख कर सरावे या विसरावे तो क्रिया लागे।

२ अजीव दिट्ठिया—चित्रामादि आभूषण देख कर सरावे या विसरावे तो क्रिया लागे।

१२ पुट्ठिया क्रिया का दो भेद राग द्वेष लाकर हाथ फेरे तथा खोटा भावसे प्रश्न करे (सवाल करे)

१ जीव पुट्ठिया।

२ अजीव पुट्ठिया।

१३ पाडुच्चिया क्रियाका दो भेद—बाहिर वस्तुके निमित्त से लागे जैसे, ओघा, पातरा, घर, हाट, इत्यादिकसे अथवा सामान्यतरे सुं राग द्वेष करने से तथा दूसरे की सम्पदा देखकर इर्षा करनेसे।

१ जीव पाडुच्चिया—जीव को खोटो वंच्छे तथा उसपर इर्षा करे उसको क्रिया लागे।

१ जीव नेसत्थिया—जीव में जीव नाखतेसे जैसे वनस्पतिमें पाणी फेंके अथवा गुरु चेलाने दुसरा सन्ता के पास व्यावच में भेजे या पुत्रने पिता दुसरी जगह भेजे या निकाल दे (वियोगसे जीव खेद पावे यानै दुःख पावे) उसकी क्रिया लागे।

२ अजीव नेसत्थिया—पत्थर, तीर, धनुष इत्यादि फेंकवासे क्रिया लागे।

१७ आण वणिया क्रियांका दो भेद—जीव अजीव वस्तु कोईरे पाससे मंगावासे देवे या नहीं देवे उसपर रागद्वेष उपजे जिसकी क्रिया लागे।

१ जीव आणवणिया।

२ अजीव आणवणिया।

१८ वेदारणीया का दो भेद—जीव अजीव ने फाडे तथा उनने छेदानेकी आशा देवे तथा उनका अवगुण करके देवे तथा हिंसाकारक दलाली करे।

१ जीव वेदारणिया।

२ अजीव वेदारणिया—जैसे सुपारीका दो टुकड़ा करे।

१९ अनाभोग वत्तियाका दो भेद—उपयोग बिना शून्य पणे [illegible] तथा प्रजानगाने लागै।

१ अणाउत्त आयणया—उपयोगशून्य पणे से वस्त्रादिक ने [illegible] ग्रहण करे वा देवे उसकी क्रिया [illegible] लागै।

२ अणाउत्त पमज्जणया उपयोग बिना पात्रादिक पुंजे [illegible] उसकी क्रिया लागै।

२० अणवकंख वत्तियाका दो भेद—इहलोक व परलोककी निरपेक्ष [illegible] काम करे। इहलोकमें निंदा हुवे पर- [illegible] लोक बिगडे ऐसा काम करे।

१ आय शरीर अणवकंख वत्तिया—अपने शरीरसे पाप लागै ऐसा काम करे अपयश करे उसकी क्रिया लागै।

२ पर शरीर अणवकंख वत्तिया—दूसराका शरीरसे पाप लागै ऐसा कर्म करे अपयश करे उसकी क्रिया लागै।

२१ पेज्ज वत्तियाका दो भेद।

१ माया वत्तिया—कपटसे राग करे उसकी क्रिया [illegible] लागै।

२ लोभ वत्तिया—लोभसे राग करे उसकी क्रिया लागै।

२२ दोस वत्तियाका दो भेद।

१ क्रोधे—क्रोध कर द्वेष करे [illegible]

२ माणे—मानसे क्रिया लागे।

२३ पउग्ग क्रियाका तीन भेद—मन वचन कायाका जोगसे कर्म ग्रहण करे याने शुभ अशुभ प्रवर्तावे।

१ मण पउग्ग।

२ वय पउग्ग।

३ काया पउग्ग।

२४ सामुदाणिया क्रियाका तीन भेद—प्रयोग क्रिया द्वारा ग्रहण किया कर्म, सामुदाणीसे खींच्या उन कर्मो का भेद च्यार तरह से करे १ प्रकृति पणे २ स्थिति पणे ३ अनुभाग पणे ४ प्रदेश पणे दृष्टान्त जैसे मेदाको आलोय कर लोधो यणायो जय तो प्रयोग क्रिया लागे और पीछे लोधाने लेकर पेठो, निमकी, खाजा इत्यादिक नाना प्रकार पणे वणाया जय सामुदाणी क्रिया लागे।

१ अणंत्तर सामुदाणिया—कालमें छेटी पड़े।

२ परंपर सामुदाणिया—कालमें छेटी नहीं पड़े।

३ तदुभय सामुदाणिया—कालमें छेटी पड़ जावे और कालमें छेटी नहीं पड़े दोनों साथ।

(पहेले समे भेद करे तब अनन्तर क्रिया दुजे समे तीजे समे भेद करे तब परंपर क्रिया।

२५ इरिया वहिया क्रिया—वीतरागी तथा केवली ने पहेले

तक उपसम श्रेणी वालामें भाव पावे च्यार उदय, उपसम, क्षयोप-
सम, प्रणामिक तथा कोई उपसमके बदले क्षायक भी केवे है
और आठमासे इग्यारमा गुणस्थान तक क्षायक श्रेणी वालामे भाव
पावे च्यार उदय, क्षायक, क्षयोपसम, प्रणामिक बारमा गुणस्थान
में भाव पावे च्यार उदय, क्षायक, क्षयोपसम, प्रणामिक तेरमा
चवदमा गुणस्थानमें भाव पावे तीन उदय, क्षायक, प्रणामिक
सिद्धो में भाव पावे दो क्षायक प्रणामिक।

अग्यारमो कारण द्वार कारण पांच १ मिथ्यात्व २ अव्रत ३
प्रमाद ४ कषाय ५ जोग पहेला तीसरा गुणस्थानमें कारण पावे
पांचही दूसरे चोथे गुणस्थानमें कारण पावे च्यार मिथ्यात्व वर्जके
पांचमा छट्ठा गुणस्थानमें कारण पावे तीन मिथ्यात्व अव्रत वर्जके
सातमा गुणस्थानसे दसमा गुणस्थानतक कारण पावे दोय कषाय
जोग अग्यारमा बारमा तेरमामें कारण एक जोग चवदमा गुण-
स्थानमें कारण नहीं।

बारमा परिसहद्वार (परिसहाद्वार) परिसह बावीस च्यार कर्मके उ-
दयसे उत्पन्न होवे. ज्ञानावर्णीय कर्मके उदयसे परिसह उत्पन्न हो
दोय प्रज्ञाको अज्ञानको, वेदनी कर्मके उदयसे परिसह उत्पन्न हो
इग्यार पहेला, दूसरा, तीसरा, चोथा, पांचमा, नवमा, इग्यारम
तेरमा, चउदमा पनरमा, अठारमा, मोहनीय कर्मके उदयसे परिस
उत्पन्न होवे आठ, दर्शन मोहनीके उदयसे परिसह उत्पन्न हो
एक दर्शनको, चारित्र मोहनीके उदयसे परिसह उत्पन्न हो
सात छट्ठा सातमा, आठमा, दसमा, बारमा चवदमा उगणीसमा

अन्तराय कर्मके उदयसे परिसह उत्पन्न होवे एक अलाभ बावीस परिसहका. नाम १ क्षुधा २ तृषा ३ शीत ४ उष्ण ५ डांसमंस ६ अचेल ७ अरति ८ स्त्री (इत्थी) ९ चरिया १० निसिया ११ सय्या १२ आक्रोश १३ वध १४ याचना १५ अलाभ १६ रोग १७ तृणफास १८ जलमैल १९ सत्कार पुरस्कार (सक्कार पुरक्कार) २० प्रज्ञा २१ अज्ञान २२ दर्शन पहेला गुणस्थानसे नवमा गुणस्थान तक परिसह उत्पन्न होवे बावीस जिसमेंसे वीस वेदे, दोय नहीं वेदे शीत वेदे तो उष्ण नहीं और उष्ण वेदे तो शीत नहीं चरिया वेदे तो निसिया नहीं निसिया वेदे तो चरिया नहीं, दसमा, इग्यारमा, बारमा गुणस्थानमें परिसह उत्पन्न होवे चवदा (आठ मोहकर्मका वर्जकर) चवदामेंसे बारा वेदे दोय नहीं वेदे शीतवेदे तो उष्ण नहीं उष्ण वेदे तो शीत नहीं; चरिया वेदे तो सय्या नहीं, सय्या वेदे तो चरिया नहीं, तेरमा. चवदमा गुणस्थानमें परिसह उत्पन्न होवे इग्यारा (वेदनी कर्मका) जिसमेंसे नव वेदे दोय नहीं वेदे शीत वेदे तो उष्ण नहीं, उष्ण वेदे तो शीत नहीं, चरिया वेदे तो सय्या नहीं, सय्या वेदे तो चरिया नहीं ।

तेरमो आत्माद्वार १ द्रव्यआत्मा २ कषायआत्मा ३ योगआत्मा ४ उपयोगआत्मा, ५ ज्ञान आत्मा, ६ दर्शनआत्मा ७ चारित्रआत्मा, ८ वीर्यआत्मा, पहेलासे तीसरा गुणस्थानतक आत्मा पावे छव ज्ञान टार चारित्र टार वर्जी. चोथा पांचमा गुणस्थानमें आत्मा पावे सात चारित्र टार वर्जी छठासे दशमा गुणस्थान तक आत्मा पावे आठ हीं, इग्यारासे तेरमा गुणस्थान तक आत्मा पावे सात

वेदनी कर्मकी दोय प्रकृति १ साता वेदनी २ असाता वेदनी। मोहनी कर्मकी अट्ठावीस प्रकृति, मोहनी कर्मका दोय भेद दर्शन मोहनी,—दूजो चारित्र मोहनी, दर्शन मोहनीकी तीन प्रकृति १ मिथ्यात्व (मिथ्यात्व मोहनी) २ समकित मिथ्यात्व (मिश्र मोहनी) ३ समकित प्रकृति (समकित मोहनी) ४ चारित्र मोहनी का पच्चीस प्रकृति जिस का भेद दोय १ कषाय २ नोकषाय, कषायका सोलह भेद (१) अनन्तानुबंधीकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ (२) अप्रत्याख्यानीकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ (३) प्रत्याख्यानीकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ (४) संज्वलनकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ, ये सोलह, नोकषायका नव भेद १ हास्य २ रति ३ अरति ४ भय ५ शोक ६ दुगंछा ७ स्त्री वेद ८ पुरुष वेद ९ नपुंसक वेद ये सब मिलकर मोहनी कर्मकी अठावीस प्रकृति हुई।

आयुष्य कर्मकी चार प्रकृति १ नरकायु २ तिर्यंचायु ३ मनुष्यायु ४ देवायु, नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु देवायु।

नाम कर्मकी [illegible] (९३) [illegible] प्रकृति [illegible]

न्यग्रोधपरिमण्डल, सादि, कुब्ज (कुबड़ा) वामन, हुण्डक छव संहनन (संग्रेण) (वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्धनाराच, किलक, छेवट्या) पांच वर्ण (कृष्ण, नीलो, पीलो, रातो, धोलो) दोय गन्ध (सुगन्ध, दुर्गन्ध) पांचरस (खाटो, मीठो, कडवो, कषायलो, तिखो) आठ स्पर्श (हलको, भारी, ठण्डो, उनो, लुखो, चोपड्यो, खरदरो, सुंवालो) च्यार अनुपूर्वी (नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता) एक अगुरुलघु, एक उपघात, एक पराघात, एक आताप, एक उद्योत, दोय विहायगति, प्रशस्तविहायगति (मनोज्ञ) अप्रशस्तविहायगति (अमनोज्ञ) एक उच्छ्वास, एक त्रस, एक स्थावर, एक बादर, एक सुक्ष्म, एक पर्याप्त, एक अपर्याप्त, एक प्रत्येक, एक साधारण, एक स्थिर, एक अस्थिर, एक शुभ, अशुभ, एक सुभग, एक दुर्भग, एक सुस्वर, एक दुःस्वर, एक आदेय, एक अनादेय, एक यशःकिर्ति, एक अयशःकिर्ति एक तिर्थंकर, एक निर्माण येतराणवे हुई; एक सो तीनकेवे जब निचे लिखी हुई दस वधे १ औदारिक वैक्रयको बंधन २ औदारिक अहारिकको बंधन ३ औदारिक तेजसको बंधन ४ औदारिक कारमाणको बंधन ५ वैक्रय औदारिकको बंधन ६ वैक्रय तेजसको बंधन ७ वैक्रय कारमाणको बंधन ८ अहारिकमें तेजसको बंधन ९ अहारिकमें कारमाणको बंधन १० तेजसमें कारमाणको बंधन ये सब एकसो तीनप्रकृति हुई।

गौत्र कर्मकी दोय प्रकृति १ उच्च गौत्र २ नीच गौ-

नव प्रकारे भोगवे १ निद्रा २ निद्रानिद्रा ३ प्रचला ४ प्रचला प्रचला ५ थीणोद्धी ६ चक्षुदर्शनावरणीय ७ अचक्षुदर्शनावरणीय ८ अवधीदर्शनावरणीय ९ केवलदर्शनावरणीय।

वेदनी कर्मका दो भेद १ शाता वेदनी २ अशाता वेदनी।

शाता वेदनी दस प्रकारे बांधे, आठ प्रकार भोगवे।

दस प्रकारे बांधे १ पाणाणु कम्पियाए (बेन्द्री, तेन्द्री, चोन्द्रीपर अनुकम्पा यानि दया करे) २ भूयाणु कम्पियाए (वनस्पति पर अनुकम्पा करे) ३ जीवाणु कम्पियाए (पचेन्द्री जीव पर अनुकम्पा करे) ४ सत्ताणु कम्पियाए (च्यार स्थावरपर अनुकम्पा करे) अदुःखणियाए (दुःख नहीं देवे) ६ असोयणियाए (शोक करावे नहीं) ७ अझुरणियाए (झुरावे नहीं) ८ अटिप्पणियाए (टपक २ आंसु पटकावे नहीं) ९ अपीट्टणियाए (मारे नहीं) १० अपरितावणियाए (परितापना उपजावे नहीं)।

आठ प्रकारे भोगवे १ मणुन्ना सद्दा (मनगमता शब्द) २ मणुन्ना रूवा (मन गमता रूप) ३ मणुन्ना गंधा (मन गमती गंध) ४ मणुन्ना रसा (मन गमता रस) ५ मणुन्ना फासा (मन गमता फरस) ६ मन सुहिया (मनमें सुख) ७ वयण सुहिया (भला वचन) ८ काया सुहिया (कायाका सुख)।

अशाता वेदनी बारा प्रकारे बांधे, आठ प्रकारे भोगवे।

बारा प्रकारे बांधे १ पाणाणं, भूयाणं, जीवाणं, सत्ताणं दुःखणीयाए (प्राण, भूत, जीव, सत्त्वने दुःख देवे) २ सोयणयाए (शोक करावे) ३ झुरणयाए (झुरणा झुरावे) ४ टिप्पणयाए

(आंसु' नखावे) ५ पिट्टणायाए (मारे, पीटावे) ६ परितावण याए (परितापना उपजावे) ७ बहु दुःखणीयाए (बहोत दुःख देवे) ८ बहु सोयणयाए (बहोत शोक करावे) ९ बहु झूरणयाए (बहोत झुरावे) १० बहु तिप्पणियाए (बहोत आंसु' नखावे) ११ बहु पिट्टणियाए (बहोत मारे, पिटावे) १२ बहु परितावणी याए (बहोत परितापना उपजावे) ।

आठ प्रकार भोगवे [illegible] अमनोज्ञ शब्द) २ अमणामा रूवा [illegible] अमनोज्ञ गंध) ४ अमणामा [illegible] अमनोज्ञ स्पर्श) ६ मण दुहिया [illegible] ७ वय दुहिया (अमणामता [illegible]

मोहनीय कर्म [illegible]

छः प्रकार बांधे [illegible] माया (तीव्र मान करे, [illegible] करे (तीव्र लोभ करे [illegible] मोहनी) ६ तीव्र चारित्रमोहनी [illegible]

अट्ठावीस प्रकारे भोगवे [illegible] ३ चारित्रमोहनीय ।

दर्शनमोहनीयका तीन भेद १ समकित [illegible] मीय ३ मिश्रमोहनी मोहनीय ।

चारित्र मोहनीयका दोय भेद १ कषाय [illegible]

कषायका १६ भेद ।

इट्ठा जसोकित्ति १० इट्ठा उट्ठाण कम्म बल वीर्य पुरिसाकार परक्कम ११ इट्ठा स्वरता १२ कांत स्वरता १३ प्रियस्वरता १४ मणुण्णा स्वरता।

अशुभ नाम कर्म च्यार प्रकारे बांधे, चवदा प्रकारे भोगवे।

च्यार प्रकारे बांधे १ कायाको बांको २ भाषाको बांको ३ भावको बांको ४ मद मत्सर भाव करके सहित।

चवदा प्रकारे भोगवे १ अणिट्ठा सद्दा २ अणिट्ठा रूपा ३ अणिट्ठा गंधा ४ अणिट्ठा रसा ५ अणिट्ठा फासा ६ अणिट्ठा गई ७ अणिट्ठा ठिई ८ अणिट्ठा लावन्नं ९ अणिट्ठा जसोकित्ति १० अणिट्ठा उट्ठाण कम्म बल वीर्य पुरिसाकार परक्कम ११ हीण स्वरता १२ दीन स्वरता १३ अप्रियस्वरता १४ अमणुण्णा स्वरता।

गोत्र कर्म सोले प्रकारे बांधे सोला प्रकारे भोगवे; गोत्र कर्मका दोय भेद १ उंच गोत्र २ नीच गोत्र।

उंच गोत्र आठ प्रकारे बांधे, आठ प्रकारे भोगवे; आठ प्रकारे बांधे १ जात अमदपणे (जातिको मद नहीं करे) २ कुल अमदपणे (कुलको मद नहीं करे) ३ बल अमदपणे (बल को मद नहीं करे) ४ रूप अमदपणे (रूपको मद नहीं करे) ५ तप अमदपणे (तप को मद नहीं करे) ६ सुत अमदपणे (सुतको मद नहीं करे) ७ लाभ अमदपणे (लाभ पामे पापणाको मद नहीं करे) ८ इस्सरिय अमदपणे (ईश्वरपणां पामे ठकुरायत को मद नहीं करे)।

आठ प्रकारे भोगवे सो इन आठ प्रकारका मद नहीं करे ते उंचगोत्र पावे।

अशाता वेदनीय की स्थिति ज० एक सागरका सात भाग करना उसमेंका तीन भाग और पलके असंख्यातमें भाग उणी, उ० तीस क्रोडाक्रोड सागरोपमकी, अबाधाकाल तीन हजार वर्ष को।

मोहनीय कर्मकी स्थिति ज० अन्तर मोहरत की उ० सीत्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम की अबाधाकाल सात हजार वर्ष की

आयुष कर्मकी स्थिति।

नारकी, देवता की स्थिति ज० दस हजार वर्ष और अन्तर मोहरत अधिक उ० तेतीस सागरोपम और क्रोड पूर्वको तीजो भाग अधिक।

मनुष्य, तिर्यंच की स्थिति ज० अन्तर मोहरत की उ० तीन पल्योपम और क्रोड पूर्वको तीजो भाग अधिक।

नाम कर्म, की स्थिति ज० आठ मोहरत की उ० वीस क्रोडा क्रोड सागरोपम की अबाधाकाल दो हजार वर्ष की।

गौत्र कर्मकी स्थिति ज० अन्तर मोहरत की उ० वीस क्रोडा क्रोड सागरोपमकी अबाधाकाल दो हजार वर्ष को।

:#:-:#: इति कर्म प्रकृति सम्पूर्णम् :#:-:#:

॥ कषाय पद ॥

सुत्र श्री पन्नवणाजी पद चवदमें में कषाय को थोकड़ो चाले छो कहे छे।

समुचय जीव चोवीस दण्डक में कषाय पावे च्यार १ क्रोध, २ मान ३ माया ४ लोभ।

(१) च्यार कारणसे क्रोध करे १ आयपरठीये कहेता आपरे उपर क्रोध करे २ परपरठीये कहेता (पराया) दूसराके उपर क्रोध करे ३ तदुभयपरठीये कहेता आपरे तथा परायाके उपर दोनों के उपर क्रोध करे ४ अपरठीये कहेता किसीके उपर क्रोध करे नहीं।

(२) च्यार प्रकारे क्रोधको उत्पत्ती होवे १ खेतु कहेता उघाड़ी वस्तुसे (खेत, उघाडी जमीन इत्यादिक) २ वत्थु कहेता ढकी हुई वस्तुसे (मकान इत्यादिक) ३ शरीर कहेता शरीरके अर्थे (वास्ते) ४ उपधि कहेता भंड उपगरण वस्त्रादिकसे।

(३) च्यार प्रकारका क्रोध १ अनंतानुबंधीको क्रोध २ अप्रत्याख्यानीको क्रोध ३ प्रत्ययाख्यानीको क्रोध ४ संजलको क्रोध।

(४) च्यार ठोकाणे क्रोध रहो १ आभोग कहेता जाणता थका क्रोध करे, २ अणाभोग कहेता अजाणता थका क्रोध करे ३ उपसम कहेता आया हुवा क्रोधको उपसमावे ४ अण उपसम कहेता आया हुआ क्रोधने नहीं उपसमावे।

ये [illegible] जीव अनुभय जीव और योगीन्द्र [illegible] ये पर्याय पर [illegible] में ४०० भेद हुआ। (१६×२५=४००)

जीव [illegible] पर्याय [illegible] कर्म बांधना २ उदय होना ३ बांधना ४ उदीरणा ५ वेदना ६ निर्जरा ये [illegible] भाव आश्री, [illegible] आश्री, [illegible] भावना [illegible] आश्री, ये [illegible] बोल [illegible] जीव आश्री, [illegible] जीव आश्री ये १६ (सजोग) [illegible] अनुभय जीव, [illegible] पर्याय पर [illegible] १०० भेद हुआ, [illegible] ८०० और ये २०० [illegible] ये १६०० भेद [illegible] हुआ। १६०० [illegible] उसी तरह १६०० [illegible] १६०० [illegible] १६०० [illegible] ये कुल ५६०० भेद [illegible] हुआ।

॥ इति [illegible] पद सम्पूर्ण ॥

॥ कषाय पद ॥

सुत्र श्री पन्नवणाजी पद चवदमें में कषाय को थोकड़ो [illegible]
सो कहे छे।

समुच्चय जीव चोवीस दण्डक में कषाय पावे च्यार [illegible]
२ मान ३ माया ४ लोभ।

(१) च्यार कारणसे क्रोध करे १ आयपइठीये कहेता आप[illegible]
क्रोध करे २ परपइठीये कहेता पराया दूसराके ऊप[illegible]
करे ३ तदुभयपइठीये कहेता आप तथा परायाके ऊप[illegible]
के ऊपर करे ४ अपइठीये कहेता किसीके ऊप[illegible]
करे नहीं

ये सोले प्रकारको क्रोध समुच्चय जीव और चोवीस दण्डक ये पच्चीस पर गीणवा से ४०० भेद हुआ। (१६×२५=४००)

जीव क्रोध करीने आठ कर्म चीण्या २ उपचीण्या ३ बांध्या ४ उदेरया ५ वेद्या ६ निर्जरया ये छव बोल गये काल आश्री, छव बोल वर्तमान काल आश्री, छव बोल आवता काल आश्री, ये अठारे बोल एक जीव आश्री, अठारा घणा जीव आश्री ये ३६ (छत्तीस) बोल समुच्चय जीव, तथा चोवीस दण्डक इन पच्चीस पर फेरनेसे ९०० भेद हुआ, उपरका ४०० और ये ९०० मिलानेसे ये १३०० भेद क्रोधका हुया, १३०० क्रोधका कह्या उसी तरह १३०० मानका १३०० माया का १३०० लोभका ये कुल ५२०० भेद च्यार कषायका हुवा।

॥ इति कषाय पद सम्पूर्ण ॥

छोटी गतागत

सूत्र श्री पन्नवणाजीका छठा पदसे छोटी गतागत कहे है सो

१ पहिली नरकमें ही आवारा का आगत पांच सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता पांच असन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता, एक संख्याता वर्ष का मनुष्य कर्मभूमि ; उसका गत , पांच सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता, एक संख्याता वर्षका कर्मभूमि मनुष्य) ।

२ दूजी नरकका उसका आगत [illegible] तिर्यंचका पर्याप्ता, एक संख्याता कालका कर्मभूमि मनुष्य [illegible] पूर्ववत्) ।

३ [illegible]

४ [illegible]

५ [illegible]

[illegible]

(नोट) इनकी गत कही यहां पांच स्थावर तिर्यंचका पर्याप्त, एक संख्याता कालकी मनुष्य कर्मभूमि समझना।

७ सातवीं नारकीमें होय की आगत (सन्नी जलचर, एक संख्याता कालकी मनुष्य कर्मभूमि, (स्त्री वेद नहीं) पांचकी गत (सन्नी तिर्यंचका पर्याप्त)

८ पचीस भवनपति, छब्बीस वाणव्यन्तर, ये एकावन जाति का देवताकी थोकाकी आगत (पांच सन्नी तिर्यंच, पांच असन्नी तिर्यंच, एक संख्याता कालकी कर्मभूमि मनुष्य असंख्याता कालकी कर्मभूमि मनुष्य, तीस जातिका अकर्मभूमि मनुष्य, छप्पन जातिका अन्तरद्वीपा, पैदल युगलिया, खेचर युगलिया) सब की गत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता कालकी कर्मभूमि मनुष्य, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति)।

९ ज्योतिषी, पहिला, दूजा, देवलोककी, इनकी आगत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता कालकी मनुष्य कर्मभूमि, असंख्याता कालकी कर्मभूमि मनुष्य, तीस अकर्मभूमि मनुष्य, खेचर युगलिया) नोट- "अकर्मभूमि मनुष्य असंख्याता कालका होते हैं" इनकी गत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता कालकी कर्मभूमि मनुष्य, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति)।

१० तीजा देवलोकसे आठवां देवलोक तक इन की (पांच सन्नी तिर्यंचका पर्याप्त, संख्याता कालकी कर्मभूमि) इन की गत (आगत माफिक)।

११ नवमा देवलोकसे बारमा देवलोक तक इनकी

([illegible], [illegible]) [illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible]
[illegible] ।।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

१५ तेउ, वाउ, मे आगत गुणचास की (उपर लड़ी कही जोकी) गत छीयालीस की (तिर्यंचका ४६ भेद उपर कह्या जोके माफिक)

१६ तीन विकलेन्द्री (बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री) की आगत गुणचास की लड़ीको (उपर कही जसो) गत गुणचास की (उपर कही जसो)।

१७ तिर्यंचमें आगत चौराशी की; ४६ की लड़ी (उपर कही जसी) ३५ प्रकारका देवता (१० भवनपति ८ वाणव्यन्तर ५ ज्योतिषी ८ देवलोक पहेला देवलोकसे आठमा देवलोक तक) ७ नारकी, ये चौराशी। गत चाणवे की चौराशी तो आगत मुजब, असंख्यातावालका कर्मभूमि मनुष्य. ३० अकर्मभूमि, छप्पन अन्तरद्वीपा, थलचर जुगलिया, खेचर जुगलिया ये चाणवे।

१८ मनुष्यका आगत छनवेकी ४१ की लड़ी (४६ की लड़ीमेंसे आठ तेउ वाउका नहीं, ४१ भेद) देवताका (१० भवनपति ८ वाणव्यन्तर ५ ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रीवेग ५ अनुत्तर विमान, ७ नारकीका पहेलीसे छट्ठी तक) ये छनवे। गत एकसो ग्यारा की ४६ की लड़ी, ४६ जाति का देवता, ७ नारकी, असंख्यात वर्षका कर्मभूमि मनुष्य, अकर्मभूमि, अन्तर द्वीपा, थलचर जुगलिया, खेचर जुगलिया, और मोक्ष गति ये एक सो ग्यारा।

॥ इति चोवीस गतागत का अठाणे बोलसम्पूर्णम् ॥

মুদ্রক :—বিমলপ্রসাদ মাজিলা,
"দুর্গা প্রেস"—৫০ নং, মসজিদবাড়ী স্ট্রীট, কলিকাতা।

पत्र व्यवहार निम्नलिखित पत्ते करें—

श्रीजैन मारवाड़ी विद्यालय,

मोहल्ला—मरोटीयों का

अगरचन्द भैरोदान सेठियाके मकानमें

बीकानेर राजपूताना (मारवाड़)

THE JAIN NATIONAL SEMINARY

Sethia Building Mohola Marotian,

Bikaner Rajputana (Marwar.)

ए० सी० बी० सेठिया एण्ड कम्पनी,

चिट्ठीका पता--पोष्ट बक्स नं० २२५

तारका पता-- "सेठिया" कलकत्ता।

A. C. B. SETHIA & Co.,

Letter Address.—"Post Box No. 225" Calcutta.

Tele. Address—"SETHIA" CALCUTTA.

श्रीवीतरागाय नमः

श्रीमंगलीक स्तवन संग्रह

पहिला भाग।

संग्रहकर्त्ता :—

धर्मचन्दजी सेठीया तत्पुत्र भैरोंदान सेठीया

मोहल्ला मरोटीयांकी गवाड़,

बीकानेर—राजपुताना

(देश—मारवाड़)

Bhairodan Sethia

Mohol!a Marotian,

BIKANER, (Rajputana).

J. B. Ry. Marwar.

प्रथमावृत्ति
१००० प्रति

वीर सम्वत् २४४८
विक्रम ,, १९७८
ई० सन् १९२१

५८, काटन स्ट्रीटके "चित्रगुप्त प्रेस" में बाबू रामसहाय वर्म्मा द्वारा मुद्रित।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीमंगलीक स्तवन संग्रह

पहिला भाग।

संग्रहकर्त्ता :—

धर्मचन्दजी सेठीया तत्पुत्र भैंरोंदान सेठीया
मोहल्ला मरोटीयोंकी गवाड़,
बीकानेर—राजपुताना
(देश—मारवाड़)

Bhairodan Sethia
Mohol!a Marotian,
BIKANER.(Rajputana).
J. B Ry Marwar

प्रथमावृत्ति
१००० प्रति

वीर सम्वत् २४४७
विक्रम ,, १९७७
ई० सन् १९२१

५८, काटन ष्ट्रीटके "चित्रगुप्त प्रेस" में बाबू रामसहाय वर्म्मा
द्वारा मुद्रित।

अणुपूर्वि

गणनेरी विधि।

१ ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं बोलणो।
२ .. .. .. सिद्धाणं ..
३ .. .. .. आयरियाणं ..
४ .. .. .. उवज्झायाणं
५ .. . .. लोए सव्व साहूणं ..

				२					३			
३	४	५	१	२	४	३	५	१	३	४	२	५
३	[illegible]	५	२	१	४	३	५	३	१	४	२	५
		५	१	४	२	३	५	१	४	३	२	५
[illegible]		५	४	१	२	३	५	४	१	३	२	५
[illegible]	४	५	२	४	१	३	५	३	४	१	२	५
१	४	५	४	२	१	३	५	४	३	१	२	५

૧૦

૨	૫	૪	૩
૧	૫	૪	૩
૫	૨	૪	૩
૧	૨	૪	૩
૫	૧	૪	૩
૨	૧	૪	૩

૧૧

૧	૪	૫	૨	૩
૪	૧	૫	૨	૩
૧	૫	૪	૨	૩
૫	૧	૪	૨	૩
૪	૫	૧	૨	૩
૫	૪	૧	૨	૩

૧૨

૨	૪	૫	૧	૩
૪	૨	૫	૧	૩
૨	૫	૪	૧	૩
૫	૨	૪	૧	૩
૪	૫	૨	૧	૩
૫	૪	૨	૧	૩

૧૩

૩	૪	૫	૨
૧	૪	૫	૨
૪	૩	૫	૨
૧	૩	૫	૨
૪	૧	૫	૨
૩	૧	૫	૨

૧૪

૧	૩	૫	૪	૨
૩	૧	૫	૪	૨
૧	૫	૩	૪	૨
૫	૧	૩	૪	૨
૩	૫	૧	૪	૨
૫	૩	૧	૪	૨

૧૫

૧	૪	૫	૩
૪	૧	૫	૩
૧	૫	૪	૩
૫	૧	૪	૩
૪	૫	૧	૩
૫	૪	૧	૩

अनुक्रमणिका ।

		पृष्ठ
१	श्री मंगलाचरण ...	... १
२	व्याख्यानके प्रारम्भकी स्तुति ...	... १
३	पंच पदांरी वंदना	... २
४	लघु साधु वंदना	... ८
५	श्री नवकार छंद ...	... १३
६	श्री नवकार स्तवन ...	... १५
७	श्री गौतमस्वामीजीरो छंद ...	... १६
८	श्री महावीरजीरी विनती	... १६
९	श्री मोरादेवीजी माताजी स्तवन	... १८
१०	श्री [illegible] सिज्झाय ...	... २०
११	[illegible]पुत्रकी सिज्झाय ..	... २०
१२	[illegible] सिज्झाय ...	... २१
१३	कर्मकी सिज्झाय	... २२
१४	कर्मोंकी लावणी	... २४
१५	वैराग्यकी लावणी	... २६

॥ शुद्धि पत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४	ज्ञान मुनिर	ज्ञाननुं नीर
२	१	अहुतन्द	अरुन्द
२	२	धदो	यद्दो
२	५	आक दुध गाय, दुध	आक दुव, गाय दुध
२	५	लक्षणनाधरखहार	लक्षणना. धरखहार,
२	९	स्फटिक	स्फटिक,
२	१२	दर्शननाधरखहार	दर्शनना धरखहार
२	१९	संबधि कीधी	सम्बन्धी कीधी
३	२२	सम्भाखनी	सम्भालेनी
४	१०	नहीं,	नहीं
४	१८	मय	मये
[illegible]	२२	प्रन्	प्रभु
[illegible]	८	मपदा	संपदा
[illegible]	११	जावाका	जीवांका
६	५	प्रश्नव्याकारणजी	प्रश्नव्याकरणजी
६	५	अगनो	अंगनो
६	६	पर्व	पूर्व
६	१९	जीण नहीं	जिन नहीं
७	५	प्राणाने धार करे.	प्राणीने थिर करे.

श्री वीतरागाय नमः

मंगलिक स्तवन संग्रह।

ॐकार विन्दुःसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदंचैव ॐकाराय नमोनमः।

॥ व्याख्यान के प्रारंभ की स्तुती ॥

वीर हिमा चलतें निकसी, गुरु गौतम के मूख कुंड ढली है। मोह महा चल भेद चली, जग की जड़ता सब दूर करी है॥ ज्ञान पयो दधि मांयरली, बहु भंग तरंगन में उछली है। तासुची सारद गंग नदी, प्रणमो अंजली निजसीसधरी है॥ ज्ञान सुमिर भरी सलिला, सुरध्येनु प्रमोद सुक्षीर निधानी। कर्म जो व्याधि हरन्त सुधा, धन मैल हरन्त शीवा करमानी॥ जैन सिधांत की ज्योति, बड़ी गुरुदेव स्वरूप गाहा सुखदानी। लोक अलोक प्रकाश भई. मुनि राज बखानत है जिन वानी॥ सोभित देव विषे मघवा,

सुकारो ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥

पहिले पद श्रीअरिहन्तजी ने बीस तीर्थंकरजी, उत्कृष्टा एकसो सित्तर देवाधिदेवजीने मांहि वर्तमानकाले वीस विहरमानजी महाविदेह क्षेत्रमांहि विचरे छै, एक हजार आठ लक्षणनाधरणहार, चोतीस अतिशय, पैंतीस वाणी करी विराजमान, चोसठ इन्द्रना वंदनीक, अठारे दोष करी रहित, बारे गुणे करी सहित, अनन्तो ज्ञान, अनन्तो दर्शन, अनन्तो चारित्र, अनन्तो बल, अनन्तो सुख, दिव्य ध्वनि, भामंडल, स्फटिक सिंहासन, अशोकवृक्ष, कुसुमवृष्टि, देवदुन्दुभि, छत्रधरे, चंवरविंजे, जघन्य दोदोय क्रोड़ केवली, उत्कृष्टा नवक्रोड़ केवली, केवल ज्ञान केवल दर्शननाधरणहार, सर्व द्रव्यक्षेत्र काल भावना जाणणहार ॥ सवैया ॥ नमूं श्री अरिहंत, करमांको कीधो अन्त, हुवा सो केवलवन्त, करुणा भण्डारी है ॥ अतिशे चोतीसधार, पैंतीसवाणी उचार, समझावे नरनार, परउपकारी है। शरीर सुन्दराकार, सूरज सो झलकार, गुण है अनन्त सार, दोष परिहारी है ॥ कहत है तिलोकरिख, मनवचकाया करी, लुली लुली वारंवार वन्दणा हमारी है ॥ १ ॥ एसा अरिहंत भगवंत ... महाराज श्री ... देवानुप्रिय ... हाथ जोड़ी मान मोड़ी. ... बारंबार ... नमस्कार ... बार ... दर्शन ... देवा ...

[illegible] सर्व [illegible] तरुणी [illegible] मुनना निवारी छे । [illegible] [illegible] ध्यान [illegible] परिणं, एवे उपाध्याय साधु, [illegible] [illegible] छे । १ । एवा श्री उपाध्यायजी महाराज [illegible] [illegible], [illegible] इन्द्रियना [illegible] चार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], इत्यादिक [illegible] गुण सहीत छे, ते [illegible] उपाध्यायजी महाराज [illegible] [illegible] (देवनो संबंध) [illegible] होय सो [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] हुं [illegible] [illegible] नमस्कार [illegible] हुं १०८ वार "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] छे ।"

। इति [illegible] पद [illegible] ।

(१) [illegible] पद [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible]) [illegible]

(४) चौथा पद उपाध्यायजी पचीस गुण करी [illegible]
पचीस गुण केहवा छे ? इग्यारे अंगना [illegible]
अंगजी, सुयगडायगजी, ठाणांयंगजी, समवायांगजी, [illegible]
ज्ञाताधर्मकथाजी, उपासकदसांगजी, अन्तगडदसांगजी, [illegible]
वाइजी, प्रश्नव्याकरणजी विपाकसूत्र। [illegible]
अर्थ पाठ सम्पूर्ण जाणे, अने [illegible] (१४ पूर्व) [illegible]
[illegible] अग्रायणीय पूर्व अस्तिनास्तिप्रवादपूर्व [illegible]
पूर्व सत्यप्रवादपूर्व आत्मप्रवाद, कर्मप्रवाद, [illegible]
[illegible] प्राणप्रवाद [illegible] क्रियाविशाल [illegible]
[illegible] इग्यारा अंग बारमो दृष्टिवाद [illegible]
[illegible] समान [illegible] (१२ उपांग भणे) [illegible]
[illegible] जम्बूद्वीप पन्नती, चन्दपन्नती [illegible]
[illegible] पुष्फिया, पुप्फचूलिया, [illegible]
[illegible] नन्दीसूत्र [illegible]
[illegible] व्यवहार, [illegible]
[illegible] क [illegible]
[illegible] कथा [illegible]
[illegible] यने [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] और [illegible] मन, [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] स्थान भानु [illegible] [illegible]
[illegible] । श्री [illegible]जी [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] पार्श्वों का [illegible] हार, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] हार, [illegible] [illegible] नहिं, [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] रहिल । [illegible] । [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], सुमति [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वा, जीतवारागने रीसोए ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ आठगुण सिद्धातणा, अतिशय छे इकतीसोए ॥ दोय पवांरा मेला किया, गुण हुवा पुरा वीसोए ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ आचारज सीजे पदे, दीवे गुण छत्तीसोए ॥ उपाध्यायजीने म्हारी वन्दणा, हुमजो अहनिस सीसोए ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ द्वादसांगी सुत्रभणे, आप भणे अरु भणावेए ॥ गुण पचीस कह्या सोभता, ज्यांरो सेवा किया सुख पावेए ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ गुण सताइस साधना, शीचरेछे काबाइणी, ज्याने हो जो म्हारी वंदणा, अठ्योतरसो यारोए ॥ नित्य० ॥ ७ ॥ एकसो आठ गुणकह्या, नवकरवालीरा पुराए । एकाग्रचित्त समरीए, आसर छे अति रुडाए । नित्य० ॥८॥ प्रथम जिनेसर नित्य नमुं, श्रीआदिसरजीरापायोए । सासन सुध प्रवरतायने, मोख नगर सीधायाए । नित्य० ।९ । प्रथम जिनेसर सुत नमुं, एकसो हुवा पुराए । इण भवमुक्ति सिधावीया, करणीकर हुवा सुराए । नित्य० । १० । चोरासीगणधर हुवा, लवधतणा भंडारोए । सहस चोरासी शिष्य हुवा, लिधोसंजम भारोए । नित्य० ।११। तीन लाख शिष्यणी हुइ, ज्याने सहेस चालीस सीवपुर पोहोताए । तिणमें हुइ बाइ मोट की, ज्यारोतोनाम थीरामीए । नित्य० ।१२। कपिल बीरामण चिंतवे, सोनो लेउं दोय मासाए क्रोड अढब सुं धापी नहीं, तृष्णारा बड़ा तमासाए । नित्य० । १३ । जो (हुवे) इच्छाधारी मांगले, योलेराय नरेसोए । ममता पाछी मूकने, लोच्या सिरना केसोए । नित्य० ।१४। पांचसे भील (चोर) प्रती बोधीया, कह्यो जिनेसरएसोए । कर्म खपावी मुक्ति गया, पाम्या पदवी क्षेमोए ।

हुवा, जीतरागने वीसोए ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ आठगुण सिद्धातणा, मजिराय छे इकतीसोए ॥ दोय पदरा मेला किया, गुण हुवा पूरा वीसोए ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ आचारज तीजे पदे, दीपे गुण छत्तीसोए ॥ उपाध्यायजीने महारी वन्दणा, हुयजो अहनिस दीसोए ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ द्वादसांगी सुत्रमते, आप भणे अरु भणावेए ॥ गुरु पचीस हुवी सोनवा, ज्यांरी सेवा कियां सुख पावेए ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ गुण सताइस साधना, चौथरेछे अणगारा ॥ ज्याने हो जो म्हारी वंदणा, अणीएरसो पारोए ॥ नित्य० ॥ ७ ॥ एकसो आठ गुणरुडा, नवकारवालीरा पुराए । एकाग्रचित्त समरीए, आसर छे घति रुडाए । नित्य० ॥८॥ प्रथम जिनेसर नित्य नमुं, गीआदेसरलोरायांगोए । सालन सुभ भवस्तावने, मोष नगर सीधायाए । नित्य० । ९ । प्रथम जिनेसर सुत नमुं, एकसो हुवा पुराए । इण भवमुक्ति सिधावीया, करणीकर हुवा सुराए । नित्य० । १० । पोरानीगणधर हुवा, लबधतरा भंडारोए । सहस चोरासी शिष्य हुवा, सिरोसंजम धारोए । नित्य० । ११ । तीन लाख शिष्यणी हुइ, ज्याने सहेन चालीन मोक्षपुर पोहोंताए । तिरमें हुइ बाइ मोट की, ज्यारोंतोनाम दीपर्माए । नित्य० । १२ । ऋषिपत धरामरा चिंतवे, सोनो लेव दीप नासाए कोट अडव सुं पापी नहीं, वृष्णारा दशा नमानाए । नित्य० । १३ । नो (हुवे) इन्द्रा धारी कांतते, पोतेरथ लोरसोए । मसन्ड पाडो मूके, सोस्या सिरना केसोए । नित्य० । १४ । पंचमे मील (चोर) प्रती बोधीया, कहो जिनेसरसमोए । कर्म खपावी मुक्ति गया, पन्या पदवी न्हेमोए ।

मलावती नारोए । भगु पुरोहित जसा भारज्या, तेना दोय कुमाए । नित्य० ।२८। इत्त्व हो अनुक्रमे निसर्या, लिधो संजम रोए । करम खपावी मुक्ते गया, चवदमां अधेन विस्तारोए । त्य० ।२९। संजती आहिडे नीसर्यो, आयो मृगपर आणोग ॥ दभाली गुरु देखने, मनमें धणोही संकारोए । नित्य० । ३० । मज्यो अपराध स्वामी मांहरो, हु इण अवसर में चूकोए । कृपा रो हो महामुनी, हु आपरी वाणीरो भुखोए । नित्य । ३१ । ासु राजा तू डरपांचो, तोमु डरे घणाजीवोए । सुण हो राजा टका, मतीदेवो नरकांरीनीवोए । नित्य० । ३२ । सात भय संसार मरण तणो भय भारीए । अपीसर कोप्यां पीछे, कोड़ां नर देवे लीए । नित्य० । ३३ । अधिपति राजा तुम भणो, म्हारो भय ती राखोए । थोड़ा जीतबरे कारणे, समता रस तुमे चाखोए । त्य० । ३४ । अथिर छे राजा थारो आउखो, जीवाने घणाइ तापोए । थारे हो राजा चालसी, साथे पुन्य अरूपापोए । नित्य० ३५। बीजलीरे चमत्कार सु, जेसोसंभारो आणोए । (सुरज चीसीता) हाथ आणी जल बींदुवो, जैसो कुञ्जर (हाथी) रो कानोए नित्य० । ३६ । इत्यादिक उपदेस सुणी, छाड़ी भीतरनी गांठोए । ाणी सुणी प्रतिबोधीया, जांणे कोरेघड़े लागी छांटोए । नित्य० । ३७ । हयगय रथ पायक दल, सैन्याच्यार प्रकाराए । तेपण राजा छोडने, लीधो संजम भारोए । नित्य० । ३८ । संजती राजा प्रतिबोधीया, छोड़ि रथ संग्रामोए । दिख्याए लीधी दीपती, गरु पासे मसिरामोए । नित्य० । ३९ । घर छोडीने नीसर्या, एकल निर्मल

धी० । तुम दरसण विन हुं भम्यों । भव मांहे हो स्वामी समुद्र मझार । दुक्ख अनन्ता में सह्या । ते कहितां हो किम आवे पार । २ । धी० । पर उपगारी तूं प्रभु, दुक्ख भांजे हो जग दीन दयाल तिण तोरे चरणे हुं आवियो । स्वामी सुनजे हो निज सेवक निहाल । ३ धी० । अपराधी पिण उधर्या, तें किधी हो करुणा [illegible] ; हुं तो परम भगत ताहरो । तिण वारोहो नहीं ढीलनो काम । ४ । [illegible] शूलपाणी प्रति बूझीयो, जिण किधा हो तुमने उपसर्ग ; डंक दिया चण्डकोसीय ने दियो हो सनु आठमो सर्ग । ५ । धी० । गोसाला गुनहो घणा, जिण बाल्या हो तारा अवरणवाद ; तेने [illegible] । शीतल लेश्या हो मूकी तु प्रसाद । ६ । धी० । [illegible] इन्द्र आवीया, इम कहता हो आया तुम [illegible] ने गौतमने [illegible] । [illegible] हो प्रभुताना वजार । ७ । धी० वचन उत्थाप्या [illegible] हो तुम साथ [illegible] लहने पिण पनरे भवे, [illegible] वली कृपाल । [illegible] । धी० । [illegible] रूपा जे रम्यो, [illegible] धान [illegible] पान [illegible] मूकी [illegible] (पानरी) [illegible] । धी० । [illegible] कुमर [illegible] दुःख्वा, [illegible]

ऋषभजी सरख्या बागमें सुण हरखाइ रे। मा०। १। न्हाय धोयने गज असवारी, करी मोरादेवी माता रे। आय बागमें नंदन निरख्यो, पाइ साता रे। मा०। २। राज छोड़ने निकल्यो रिखराय, आ लीला अद्भुती रे। चमर छत्रने और सिंहासन, मोहनीमुरत रे। मा०। ३। दिनभर बैठी वाट जोवन्ती, फदग्हारो रिखबो आसीरे। केहती भरतने आदिनाथ की, खबरां लावो रे। मा०। ४। किसी देशमें गयो वालेसर, सुज बिना वनिता सुनीरे। बात कहो दिल खोल लालजी, क्युं करणा सुनीरे। मा०। ५। रहा मजेमें हुइ सुख साता, सुद किया दिल चायारे। अबतो बोल आदेश्वर म्हासुं, कलपे कायारे। मा०। ६। देर हुई सो ढोगद वाला, बात भली नहीं किनीरे। गया पछे कागद नहीं दिनो, म्हारी खबर नहीं लिनी रे। मा०। ७।। ओलंभा में देऊं कठे लग. पाछो क्युं नहीं बोलेरे। दुख जननी नो देख आदेश्वर, हिवड़े तोलरे। मा०। ८। अनित्य भावना भाइ मावाजी, निज आत्मने तारीरे। केवल पामी मुगत सिधाया, ज्यांने वंदणा म्हारी रे। मा०। ९। मुक्तिका दर्वाजा खोल्या, मोरादेवी मातारे। काल असंख्याता रहा उपाड़ा, जंबु जड़ गया जातां रे। मा०। १०। साल बहोत्तर तीर्थ ओसियां, पेवर मुनि गुण गायारे। मुर्त मोहन प्रथम जिनंद की, प्रणमुं पायारे। मा०। ११।

इति सम्पूर्णम्।

ऋषभजी ऊतरया बागमें सुण हरखाइ रे। मा०। १। नहाय धोयने गज असवारी,करी मोरादेवी माता रे। जाय बागमें नंदन निरख्यो, पाइ साता रे। मा०। २। राज छोड़ने निकल्यो हिरखो, था लीला अदभुती रे। चवर छत्रने धौर सिंहासन, मोहनीसुरत रे। मा०। ३। दिनभर बैठी वाट जोवन्ती, कदम्हारो हिरखो स्थासीरे। केहती भरतने आदिनाथ की, खबरां लावो रे। मा०। ४। किसी देशमें गयो वालेसर, मुज बिना वनिता सुनीरे। बात कहो दिल खोल लालजी, क्युं वरण्या मुनीरे। मा०। ५। रहा मजेमें हुइ सुख साता, खुब किया दिल चायारे। अबतो बोल आदेश्वर म्हासुं, कलपे कायारे। मा०। ६। खैर हुई सो होगइ बाला, बात भली नहीं किनीरे। गया पछे कागद नहीं दिनो, म्हारी खबर नहीं लिनी रे। मा०। ७॥ ओलंभा में देऊं कठे लग. पाछो क्युं नहीं बोलेरे। दुख जननी नो देख आदेश्वर, हिवड़े तोलरे। मा०। ८। अनित्य भावना भाइ माताजी, निज आत्मने तारीरे। केवल पामी मुगत सिधाया, ज्यांने वंदणा म्हारी रे। मा०। ९। मुक्तिका दर्वाजा खोल्या, मोरादेवी मातारे। काल असंख्याता रहा उघाड़ा, जंबु जड़ गया जातां रे। मा०। १०। साल बहोत्तर तीर्थ ओसियां, घेवर मुनि गुण गायारे। मुर्त मोहन प्रथम जिनंद की, प्रणमुं पायारे। मा०। ११।

इति सम्पूर्णम्।

आंवरी । १ । दस्व मेद विचार । तिण दुःख टोळीरे मद कहा, न करणी शरम लिगार । क० । ३ । मद पुरुष सारां रे साधवा, कंपो बांन विशेष । तिर्हा राय आन्योरे सोवदा मिर्तीवा रीव अनेक । क० । ३ दोय पन पेहरीरे पावड़ी, वांस चढ्यो गज मेळ । निरधारा ऊपर नाचवो छेले मना मया केरा । क० । ४ । ढोल बजावेरे नाटवी, गावे किन्नर (नाद) नाद । पाय (ठवे) घुघरा घन घणे गाजे अम्बर नाद । क० । ५ । मद राजिन्द्र मन चिंतवे, लुब्ध्यो नटवीने साथ । जो नट पड़े रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ । क० । ६ । दान न आपेरे नृपति, नट जाणी नृप बात । हुं धन बंछुं रे रायनो, राय बंछे मुझ घात । क० । ७ । तब तिहां मुनिवर देखीया (पेखीया) धन धन साधु निराग । धिग धिग विषयाकुळीयने, इम पाम्योवैराग । क० । ८ । थाळ भरी सुध मोदके, पदमणी उभीछे बार । लो लो केहे लेता नथी, धन धन मुनी अणगार । क० ९ । संवर भावेरे केवली, थयो मुनि करम खपाय । केवल महिमारे सुर करे, समय विजय गुण गाय । क० । १० । इति ।

॥ अथ भरत बाहुबलरीसिझाय लिख्यते ॥

राज तणारे अती लोभीया, भरत बाहुबल झुझेरे ; मुठ उपाड़ी मारवा । बाहुबल प्रति बुझेरे । वीरामहारा गज थकी उतरो, (गज चढ्यां केवल न होयरे । वंधव गज थकी उतरो) । १ । ब्राह्मी सुंदरी इम भाषेरे, ऋषभ जिणेश्वर मोकली ।

धारे करम लग माथे चाल्यो । सीख गहे घर चालोरे । प्रा० । ५ ।
। क० । दधिवाहन राजा की बेटी । चावी चंदनबाला । चौहट
बजु चौहटा में बेची । कर्म तणा ए चालारे । प्रा० । ६ । क०
संभू नामे आठमो चक्री । धर्म सागर नाख्यो । सोले सहस जख
हथा देखे । पिण दिगाई नहीं राखेरे । प्रा० । ७ । क० । ब्रह्मदत्त
नामे बारमो चक्री । पर्खी क्रियो चोपो । इम जाणी प्राणी थे,
कर्म मति कोई बांधोरे । प्रा० । ८ । क० । दुष्पन कोड़ यादव को
साहिब । कृष्ण महाबल जाणी । अटवी मांहे गूंथी पवाड़ो ।
बिन जल चल्यो पाणीरे प्रा० । ९ । क० पांडव पांच महाजुझारा
[illegible] द्रौपदी नारी । धारे करम लग बन रहवड़ोया । मर्यादा
[illegible] । प्रा० । १० । क० । [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

चिन्ता नहीं लाया; कोड़ी २ माया जोड़ी, लालच लोभमें बहु लाया; आशा तृष्णा मेटी नाहीं, करता है माया माया; (बड़ाभागी) कूड़ कपट छल देइर करता, कोड़ीसटे तूं जाव लड़ता, जोड़ २ धनमें धन धरता, मायां कुटुम्बसें रोटा करता, जनम मरण के दुःख अगनमें क्यूं कर्षे होया एमका, यो संसार० २, पाप मान अहंकार भरा है, राग द्वेषनें रंगपावा; जाल फरती दगारे फटका अनेक दूसर नूं पहावा. मेणा मोसा देवे लोकांने, आपेने कूड़ा परता; बड़ो आदमी बजे लोकांमें, मिथ्यात कुजद्ध सुहाला, पाप अठारे दव रूप बांधे, मोह करमनें मदमाता; अनेक बल तू लेके करावे, पापकी पोट माथे धरता. मात पिता सब कुटुम्ब कबीला, बेटा लुगाई मेरा धन खाता पाप करम तूं बांधे एकलो. नरक निगोदमें पड़ जाता (बड़ाभागी। सब मुतलबकी प्रीत सगाई बिना स्वारथ करै लड़ाई घणा बहुम जो पाले पाइ.पाप उदे फेर नहा कोइ नाई (मायां।सागर पर्यापन होता आउखा खूट जाय आतम एमका. यो संसार०३. म्हारा म्हारा कर रह्या मूरख थारा सब पलणका है (देखणका है) कनक कामना कुटुम्ब कबीला.जमीं घर देखणका है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है.[illegible] [illegible] [illegible] मूरख [illegible] [illegible] जाणा है मात पिता सब कुटुम्ब कबीला [illegible] [illegible] [illegible] है. [illegible] [illegible] सब [illegible] २ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिन [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] या ही जनम गमाणा है। बड़ाभागी [illegible] [illegible] (मन [illegible]) [illegible] [illegible] नाहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जावे तिर्यंचमें, घणो दुखियोरे थाय, मु० ५, बनास्पती दोय जातरी, भाखी श्री भगवान, सूई अमनिगोदमें, जीव अनंता बखाण, मु० ६, ये पांचों ही थावर जाणिये, मति वाओ तरवार, जीव गरीब अनाथ छै, मति काटो निराधार, मु० ७, त्रसथावर हणियां बिनां, पुद्गल पूजा न होय, विन भुगत्यां छूटे नहीं, मरसी घणो रोय २, मु० ८ पुद्गलरी प्रपती करे, परतिख लूंटेरे प्राण, अनुकंपा घटमें नहीं, खुलि दुरगति खाण, मु० ९ रम्मत देखणने गयो, ऊभो रह्यो सारी रात लघु नीत संका घणी बाहिर निसरियो नहीं, जाव, मु० १०, नाचे वैश्यारो खाचफो, निरखे रंग सुरंग, रमणीरे संगमें राचियो, पोढ़े लाल पिलंग, मु० ११, दुख करने सुख मानतो, रुलियो काल अनंत, लख चौरासी जीवा योनी में भाख्यो श्री भगवंत, मु० १२ गल कट्टू मिलिया घणा भरियो ठगांरो बजार, कोई पुत्र जणनी जणयो घाले सुत्ररे अनुसार, मु० १३ आ सब संपदा कारमी, जांणो बालूडांरो ख्याल, निसचै परभव जावणो, बांधो पाणी पहिलां पाल, मु० १४ सुसरारे घरे जीमतो, सखियां गाय रही गीत, थोड़ा दिनामें पड़सी आंतरो, निश्चै जाणों यही रीत, मु० १५ कायरने चढ़े धूजणी, सूरा सनमुख होय, नाठा जावे गीदड़ा, मानव भव दियो खोय, मु० १६, ओ संग्राम कह्यो केवली, सूरा सन्मुख थाय, झूझ रह्या अपणी देहसुं गुमान गर्व गमाय, मु० १७, जीव दयारो सिर सेहरो, बांध्यो श्री नेमजिनंद, गजसुकमाल फनड़ो बणयो, पाम्यां परमानंद, मु० १८ मेता-

घट गई नींद सुन गई भ्रांति कंत आत्मा मुक्तं रे दो० ६ सुपने राज लियो मन जागो निरधन रूप दुःख न्यारा रे दोनो० ७ अब दवि रंग जाण्यो मांग २ काम न्यारा रे दो० ७ रतनचंद गुरु देस ये दिया निज गुरु मन टकसाल रे अलप लख्यो सदगुरु दरसाई पुद्गल भरम निटारा रे दो० ८ इति पदं ॥

(अथ धर्म्म बजाजकी लावणी)

॥ म्हारो मान बजाजी सट द दे पूंजी मांह दुकानजी, (टेर.) काया रूप नगरके मांही, वैराग माललो आद रंग निष्पा मन नाहर ध्यावो, शुद्ध भाव पाल बिछाय हो म्हारो० १, जिन बाणी को गज ते मापो, जरा फर्द मत आप, माप २ दवें सदगुरु देवे, नरभव लेखा वाए हो म्हारो० २, जीव दयाका मुस्लम मारो रेसम है संतोष, डब्बल जीण समता डरोसरे, ज्ञान दान दे रोक रे म्हारो० ३, तपस्याको बंदागर भारा, साही शीलकी जांच, एता व्यापार करो चेतनजी, मिले तुम्हें निर्वाणजी म्हारो० ४ इति पदं ॥

॥ अथ श्री शांतनाथजीरो (तान) छंद लिख्यते ॥

श्री शांत जिनेश्वर सोलमांजी जगतारन जगदीश, विनती म्हारी सांभलो में तो अरज करूं धरि शीश (आंकणी) प्रभुजी म्हारा प्राण अधारो रे सर्व जिवां हित धारो रे; साता

उड़ गई नींद खुल गई अंखियां अंत छाणाका छाणा रे यो० ६ सुपने राज लियो सब जगको सिरपर छत्र ढुलाणा रे योगी . छत्र पति रंक जाग्यो मांग २ अन्न खाणा रे यो० ७ रतनचंद जुग देख ये थिरता निज गुण मन ठहराणा रे अलप लख्यो सदगुरू बचनासूं पुदगल भरम मिटाणा रे यो० ८ इति पदं ॥

(अथ धर्म्म बजाजकी लावणी)

॥ कहो मान बजाजी सद्गुरु दे पूंजी मांड दुकानजी,(टेर,) काया रूप नगरके मांही, वैराग मालमो जाय रज मिथ्या मत बाहर कढ़ावो, शुद्ध भाव पाल बिछाय हो कहो ० १, जिन बाणीको गज लै मारी, जरा फर्क मत जाण, माप २ तनें सतगुरू देवे, मतकर खेंचा ताण हो कहो ०२, जीव दयाका मुखमल भारी रेसम है संतोष, उज्वल जीण समता सणोसरे, ज्ञान दाम दे रोक रे कहो ०३, तपस्याको थंदागर भारा, साड़ी शीलकी जांण, एसा ब्यापार करो चेतनजी, मिले तुमें निर्वाणजी कहो ०४ इति पदं ॥

॥ अथ श्री शंतनाथजीरो (तान) छंद लिख्यते ॥

श्री शंत जिनेश्वर सोलमांजी जगतारन जगदीश, विनती म्हारी सांभलो में तो अरज करूं धरि शीश (आंकणी) प्रभुजी म्हारा प्राण अधारो रे सर्व जिवां हित कारो रे ; सासा

रखा सुखकारीया हो ॥ म० ॥ ए सरखो मंगलीक ॥ ए सरखा वचन कहावे ॥ म० ॥ ए सर्वां दम लेज ॥ ही० ॥३॥ सुख साता करवे घणी हो ॥ म० ॥ जे ध्यावे नर नार ॥ परभव जांता जीवने हो ॥ म० ॥ एह वडो आधार ॥ ही० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतणी हो ॥ म० ॥ सिंह विघाने सूर ॥ वैरी दुसमण चोरटा हो ॥ म० ॥ रहे सदाई दूर ॥ ही० ॥ ५ ॥ निस दिन माने ध्यावंता हो ॥ म० ॥ पावे परम आनंद ॥ कमी नहीं किण . बातरी हो ॥ म० ॥ सेव करे सुर इंद्र ॥ ही० ॥ ६ ॥ गेले घाटे चालता हो ॥ म० ॥ रात दिवस मंझार ॥ गांवां नगरां विचरंता हो ॥ म० ॥ विघन निवारण हार ॥ ही० ॥ ७ ॥ इण सरीखो सर्वां नहीं हो ॥ म० ॥ इण सरीखा नहीं नाम ॥ इण सरीखो मंत्र नहीं हो ॥ म० ॥ जपतां वाधे माम ॥ ही० ॥ ८ ॥ सगलो सर्वां री आलम हो ॥ म० ॥ नेड़ो न आवे रोग ॥ करवे आनंद जीवने हो ॥ म० ॥ एह हवे संयोग ॥ ही० ॥ ९ ॥ मन चिंत्या मनोरथ फले हो ॥ म० ॥ निश्चे फल निरधार ॥ कमी नहीं देवलोक में हो ॥ म० ॥ सुख हवा फल सार ॥ ही० ॥ १० ॥ मंगल अठारे लावसे हो ॥ म० ॥ गाली सेवे घाट ॥ रिख चोथमलजी इम करे हो ॥ म० ॥ सुख ले [illegible] ॥ ही० ॥ ११ ॥ इति।

॥ मुक्ति जाणेकी लावणी लिख्यते ॥

(दूहा) [illegible]

११ (टेर मुद्देईकी) चेतन कहै सताबी मांही, सुण शासण सिरदार, इमानदारहै गवाह हमारे,जाणै सब संसारजी जि०मे० १२ मैं चेतन अनाथ प्रभुजी, करम करेवी मारी,जीव अनंते राह चलत कूं, लूंट चौरासीमें डालाजी जि० मे० १३ बड़े २ पंडित इण लुंटे, एसा दम बतलावा, धरम कहा और पाप कराया, एसा करज चढ़ायाजी जि० मे०१४ असल एन सरकारी सूत्रमें,मनमत अर्थ बसाया, धर्म एनमें हिंसा थह कर, उलटा जीव फसायाजी जि० मे० १५ भेद अर्थसें वेद पढ़ाया,हिंसक यज्ञ बताया, इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर, एसा मुझे बताया जी जि०मे० १६ हिंसा मांहि धर्म बताया, तपस्या सेती छिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनें, झूटा जाल फैलायाजी जि० मे० १७ एसा करो इनसाफ प्रभुजी, अपील होण न पावे, इकतरसी चेतनकी होये, जन्म मरण मिट जावेजी जि० मे० १८ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनोंकूं समझाया, चेतनकी डिगरी कर दीना, करमोंका करज बतायाजी जि० मे०१९ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिराया, सुद्ध संजम जब करी जमानत, अनेका सुत छूटायाजी जि० मे० २० माधव छोड संवरकुं धारो तपस्यासें चित ल्यावो, जल्दी करज अदा कर चेतन, सांचा सुधिकुं जावोजी जि० मे०२१ सुद्ध संजम तपकरी जमानत, चेतन डिगरी पाई, फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् इकतीसें अठ्ठाईजी जि० मे० २२ इती डिगरी संपूर्णम् ॥

पावैसुख ॥१६॥ थथा थिर मन राखिये थिरतामें सब बात अधिको खोटो न हुवे जो अपणो तिलमात॥१७॥ ददा दानसमापीयें जगमें मोटो दान नांम रहै दाता वर्णो जाचक करें वखांण॥१८॥धधा धरम-थकी टलै दालिद्र दुख दोभाग सगला सुखपिण धरमथी धन धीणो सोभाग॥१९॥नना नारी नागणी जे न करो वेसास (विश्वास) देखतही डस जावसी घाल प्रेमको फांस ॥२०॥पपा पाप न कीजिये अलगा रहिये आप जो करसी सो पावसी क्या बेटा क्या बाप ॥२१॥फफा फल तिणवे लहा जिण नर सेव्या जेह आकेडो अकडो टींबा कांये आंबअटेह ॥२२॥ बबा बाड़ी गुणकी कीजे धरमज देव बीजी बाड़ी सब तजो ज्युं पावो सीवपुर खेव ॥२३॥ भभा भाग दिनायकीयां उद्यमथी सुख नांहि पुरट्यो ध'दर करंटीयो पड्यो खाप मुख मांहि ॥२४॥ ममा ममता परिहरो एह अनादिकी आग समताजल जिम उपराली ताको मोटो भाग ॥२५॥ यया यारी राखीये परमेश्वरके साथ पार उतारे छिनमें दुखी खाली हाथ ॥२६॥ ररा राग निवारीये रागथकी दुख जांण परिहरोने मात्रा दियां दोन्युं होय समान ॥२७॥ लला लोभ न कीजीये लोभें लखण जाय सेठ मोलको आदमी खोटो सटै दिखाय ॥२८॥ ववा वैर न कीजिये वैर बुराई मान वैरव वांछय एम यदी लोक हांसी पर हांत ॥२९॥ सशा सांसो मत करो जिन शास्त्रों के प्रमाण सांसा मांही जे पड्या नर निंदक वे जाण ॥ ३० ॥ षषा मरम न खुंलीये सरम थकी सुख होय मरम छिपाना आदमी बात न पूछे कोय ॥३१॥ हहा हांस हिंसाकी पूरी बिन पुरुष जिन्न जो टरसी करै

केहवी आकास न माय ॥३२॥ बत्तीस अक्षर बूझने करो सार्क अभ्यास सीख भली चित धारज्यो बधे विद्या विलास ॥ इति अक्षर बत्तीसी समाप्त ॥

॥ श्री साधु आचार बावनी ॥

॥ दुहा ॥

वर्धमान शासण धणी, गणधर लागु पाय । दया जो माता वीनवे, वन्दु शीश नमाय ॥ १ ॥ ठाणागमे चालीया, श्रावक च्यार प्रकार । मात पिता सरिखा कह्या, साधाने हितकार ॥ २ ॥ करडो काठी सीख दे, साधाने हितकाज । ढीला पड्या दे नहीं, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ३ ॥

॥ अथ दान जिरवामिकी लिख्यते ॥ जो स्वामी घर छोडीने नीसन्या थेनी लीधो सयम भारजी जास्वामी पंच महाव्रत पालज्यो मनितीरजी जिणजीरी कारजी जी० अरज सुणो श्रावक तणी १ जी० नर जन संयम आदरो निंदाने विकथा निवारजी जी० बाहन परिग्रा जीतजो पोता पालगो व्योहा सो धारजो जी० अ० २ जी० गृहस्थीगु मोह मत राखजो थे तो छांडयो कुटुम्ब अकारजी जी० अमूजणी आहार देवने पिछा फिर आज्यो लिग कारजी जी० अ० ३ जी० कोइक वैरागी बने काढ्या कोइ सुगेने मोरजी जी० कोइक वेरागी सूका दुरुषा देने मन राख्यो रिवाडिरजी जी० अ० ४ जी० कोइक चरमी बनें करुणा कोइक समणी सीखजो जी० कोइक देरी धनें गालियां मनो

आंगण्यो मनमें रोसजी जी० अ० ५ जी० छलछिद्र जोवोमती मती आंगण्यो रागनें द्वेषजी जी० क्रोध कषाय करज्योमती क्षमा करवि विशेष जी० अ० ६ जी० अंतर मंत्र कर ज्योमती मती करज्यो स्वप्न विचारजी जी० ज्योतिष निमित्त भाखो मती मति लोपज्यो जिणजीरी कारजी जी० अ० ७ जी० रंग्या चंग्या रहणो नहीं, नहीं करणो देह शृंगारजी जी० केश शृंगार बणावतां सुख धोवतां दोष अपारजी जी० अ० ८ जी० कपड़ा पेहरो ऊजला भारो मोला चित्त चायजी जी० साधु दीसे सिणगारिया लोगां मांहि निंदा थायजी जी० अ० ९ जी० धरया बणाया बींद ज्युं गोरा फूटरा दीदारजी जी० चलिमेल ढवारे शरीरनो साधने लागे जंजालजी जी० अ० १० जी० चोमासो करज्यो देखनें स्थानक लीज्यो विचारजी जी० ज्यां रेवे नपुंसक कलरी नहीं साधवणो आचारजी जी० अ० ॥११॥ जी० संथारो करज्यो देखनें तपस्या करज्यो विचारजी ॥ जी स्वामी पाछे मन डिग जावसी, तो हंसेगा नर नारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १२ ॥ जी स्वामी दोष साधु सीन धारज्यां जिणरको विराधिक कालजी ॥ जी स्वामी एक साधु दोष धारज्यां, नव करज्यो कईं विहारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १३ ॥ जीस्वामी मेघ कुमारजर मोटका, करी धर्म रुचि अणगारजी ॥ जीस्वामी थांइमानी करता करी, पुंच्या अनुक्रम विचारजी ॥ जीस्वामी० (अर्ज) ॥ १४ ॥ जी स्वामी जोवते दीर कालनी, दोनोंनो सुखनोंरी कारजी ॥ जी स्वामी दुकड

पड्या जीमवऐ स्वादजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २४ ॥ जीस्वामी ताकताक जाये गोचरी, वली लावे ताजा मालजी ॥ जीस्वामी थरस ऊपर नजर नहीं धरे, बली वणस्यो कुन्दो लालजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २५ ॥ जीस्वामी एक घरे दोन्यु टंकां, नित लावे लगावण आहारजी ॥ जीस्वामी नित पिंड आहारयेन्यां थकां, साधुने लागे तीजो अनाचारजी जीस्वा० (अर्ज) ॥२६॥ जीस्वामी ऊंचे डोरे मुहपत्ती, पलेवणरी नहीं ठीकजी ॥ जीस्वामी सांझ सवेरे सुई रहे, एतो किए विध माने सीखजी जी० (अर्ज) ॥ २७ ॥ जीस्वामी गछवासी सुं परचो घणो, आवण जावण होयजी ॥ जीस्वामी लेणादेणा सटापटा, साधुने करणा नहीं जोगजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २८ ॥ जीस्वामी कुण बोलीनें नटे दुजो व्रत देवे खोयजी ॥ जीस्वामी सांचाने झुठो करे; येतो सांग साधुरो होयजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २९ ॥ जीस्वामी प्राछित लागे समठो श्रावक पिण साखी होयजी ॥ जीस्वामी घेठा थका लेवे नहीं जारे परभवरो डर नहीं कोयजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ३० ॥ जीस्वामी खाय पीयने सुई रहे, एतो येठा पाड़कमणो ठायजी ॥ जीस्वामी वस्तर पातर राखे घणा, ज्याने जिनपासता केवायजी। जीस्वा० अ. ॥३१॥ जीस्वामी नारी आवे एकली अक्षर पद सीखण काजजी। जीस्वामी वेगी आवे रातकी, मती सीखावजो मुनिरायजी। जीस्वा० अ. । ३२ । जी स्वामी सावद्य भापानी चोपियां, मेलोह मंडावण काजजी। जीस्वामी पेड़ी जमावे आपणी, वे-

कोलखज्यो आचारजी । जीस्वामी गुणवंत साधु साधवी, ज्याने वन्दू बारंबारजी । जीस्वा० अ० । ४२ । जीस्वामी आपणो पापे परनिन्दा करे, तिणमें मेरे दोषजी । जीस्वामी दुजे-संबर देखलो, थे किणविध जासो मोक्षजी । जीस्वा० अ० । ४३ । जीस्वामी साधुजीमें गुण अति घणा, मोनूं पूरा कह्या न आवजी । जी स्वामी थे ठारे मन भावसी, एतो दीक्षा-दीव करजी । जीस्वा० अ० । ४४ । जीस्वामी आराधनाने विराधना, मनी करजो बाखाणजी । जीस्वामी साधु साधवी हेवेजिको, इसे लीजो बखाणजी । जीस्वा० अ० । ४५ ।

(दोहा) मुनीवर कह्यां गोचरी, हरजो मुनति समार ।
देखवानो पाड़ो वरजि करी फिरजो नम संसार । १ ।

जीस्वामी विणवारण मैं वरजियो, थेंही संभलजो अधिकार जी । जीस्वामी दंपा स्वपने विचने, खारेभने होवे विकराजी । जीस्वा० अ० । ४६ । जीस्वामी मानंदेव घाव विच घरजो, [illegible] विरगणु विच न कारजी । जीस्वामीजी दंपा मनने [illegible] होवे, तो आचारेम लीजो देखजी । जीस्वा० अ० । ४७ । जीस्वा० कदी वांदो कुशदी, तो टूटे शिथिल जाणजी, [illegible] जा हवे [illegible], [illegible] शिथिल जाणजी । जीस्वा० अ० । ४८ । जीस्वामी [illegible] [illegible] हूणनूं [illegible] [illegible] । जीस्वामी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । जीस्वा० अ० । ४९ । जीस्वामी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

॥ लघु आलोयणा ॥

॥ अथ श्रावक लालाजी कृत लघु आलोयणा प्रारम्भ ॥

अनंत चोवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंता कोड़ विहरमान जिन धर सवे, केवली प्रत्यक्ष कोड़ ॥१॥ गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार। यथा योग्य वंदणा करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥ मत्थेण वंदामि श्रीजिनेन्द्र भगवंत देवाधिदेव अनंत केवल ज्ञानी, महाराज आपके आज्ञा रूप महा परम कल्याणकारी श्री दया धर्मादिक शुभ योगनें विषे जो जो प्रमाद कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन कायाएं करी सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या नहीं कराया नहीं अनुमोद्या मन वचन कायाएं करी आपके आण अज्ञारूप विषय कषाय हिंसादिक पाप, आश्रव अशुभ योगनें विषे मैंने घणा घणा उद्यम कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन काया करी एक अक्षरके अनंतवें भाग मात्र स्वप्नमें भी ज्ञान दर्शन चारित्र दान शील तप भावना उपशम विवेक संवर सामायकादिक छऊं आवश्यक पोसो अभिग्रह नियम व्रत पच्चखाण सुमति गुप्ती समता धीरज वैराग भावरूप सज्झाय ध्यान मौनादिक निज स्वरूप शुद्ध मार्गकी विराधनादिक अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार जाणुवां अजाणवां मन वचन काया करी अविनय अभक्ति अशातना

॥ लघु आलोयणा ॥

॥ अथ श्रावक लालाजी कृत लघु आलोयणा प्रारम्भ ॥

अनंत चोबीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंता कोड़ विहरमान जिन वर सवे, केवली प्रत्यक्ष कोड़ ॥१॥ गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार। यथा योग्य वंदणा करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥ मत्थेण वंदामि श्रीजिनेन्द्र भगवंत देवाधिदेव अनंत केवल ज्ञानी, महाराज आपके आज्ञा रूप महा परम कल्याणकारी श्री दया धर्मादिक शुभ योगनें विषे जो जो प्रमाद कन्या कराया अनुमोद्या मन वचन कायाएं करी सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कन्या नहीं कराया नहीं अनुमोद्या मन वचन कायाएं करी आपके घण आज्ञारूप विषय कषाय हिंसादिक पाप, आश्रव अशुभ योगनें विषे मैंने घणा घणा उद्यम कन्या कराया अनुमोद्या मन वचन काया करी एक अक्षरके अनंतवें भाग मात्र स्वप्नमें भी ज्ञान दर्शन चारित्र दान शील तप भावना उपशम विवेक संवर सामायकादिक छव आवश्यक पोसो अभिग्रह नियम व्रत पच्चखाण सुमति गुप्ती समता धीरज वैराग भावरूप सज्झाय ध्यान मौनादिक निज स्वरूप मुक्ति मार्गकी विराधनादिक अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार जाण्यां अजाण्यां मन वचन काया करी अविनय असक्ति अशातना

मिच्छामी दुक्कड़' इति एक एक बोलमें जाव असंख्याता अनंता बोल तांइ जो मे आदरवा जोग बोल आदन्या नहीं आराध्या नहीं पाल्या नहीं फरस्या नहीं विराधनादिक करी करावी अनुमोदी मन वचन काया करी तस्स मिच्छामी दुक्कड़' ।

॥ दुहा ॥

कहवानें आवे नहीं, अवगुण भन्या अनंत । लिखवामें क्युंकर लिखुं, जाणो श्रीभगवंत ॥१॥ अरिहंत सिद्ध सर्व साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार । मंगलीक उत्तम सदा, निश्चेय सरणा च्यार ॥२॥ इति लघु आलोयणा समाप्त ॥

षट द्रव्यनी सज्झाय ।

षट द्रव्य ज्यामें कह्यो भिन्न भिन्न, आगम सुणत बखाण । पंचास्तीकाया नव पदारथ, पांच भाख्या ज्ञान ॥ १ ॥ चारित्र तेरे कह्या जिनवर, ज्ञान दर्शन प्रधान । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ २ ॥ चौवीस तिर्थंकर लोक माहीं, तिरण तारण जहाज । नव वास नव प्रतिवास देवा, बारे चक्रवर्ती जाण ॥ ३ ॥ बलदेव नव मच हुआ त्रेसठ, घणे गुणारी खाण । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ ४ ॥ च्यार देशना दिवी जिनवर, कियो पर उपकार । पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार शिक्षा धार ॥ ५ ॥ पांच संवर जिनेश भाख्या, दया धर्म प्रधान । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ ६ ॥ और कहांलग करूं वर्णव, तीन लोक प्रमाण । सुणता पाप विनाश जावे, थाय पद निर्वाण ॥ ७ ॥ देव विमाणीक मांहे पदवी, कही पांच परधान । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

[illegible]

श्री जैन भाइयोंकी विद्यालय

मोहल्ला—मरोटियोंका

[illegible]

बीकानेर-राजपुताना

(जोधपुर, बिकानेर रेलवे)

THE JAIN NATIONAL SEMINARY

SETHIA BUILDINGS

Moholla—Marotian

BIKANER, (*RAJPUTANA*)

वी० सेठिया एन्ड सन्स

(कोटके दरवाजे बाहेर)

बीकानेर—राजपुताना

B. SETHIA & SONS

Merchants

SETHIA COMMERCIAL HOUSE

Out Gate, Near Ratunbeharyi Temple

King Edward Memorial Road

BIKANER (*RAJPUTANA*)

* श्रीवीतरागाय नमः *

श्री ज्ञान थोकड़ा संग्रह ।

भाग पहिला.

संग्रह कर्ता :—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

मोहल्ला मरोटियों की गवाड़,

बीकानेर, राजपूताना (देश मारवाड़)

BHAIRODAN SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN,

Bikaner Rajputana.

J B. Ry. (MARWAR)

प्रथमावृत्ति	वीर सम्वत् २४४७ विक्रम सम्वत् १९७७ ई० सन १९२१	१००० प्रत

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्री ज्ञान थोकड़ा संग्रह ।

भाग पहिला.

संग्रह कर्ता :—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

मोहल्ला मरोटियां की गवाड़,

बीकानेर, राजपूताना (देश मारवाड़)

BHAIRODAN SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN,

Bikaner Rajputana.

J. B. Ry. (MARWAR)

प्रथमावृत्ति } वीर सम्वत् २४४७ / विक्रम सम्वत् १९७७ / ई० सन १९२१ { १००० प्रत

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्री ज्ञान थोकड़ा संग्रह ।

भाग पहिला.

संग्रह कर्ता :—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

मोहल्ला मरोटियां की गवाड़,

बीकानेर, राजपूताना (देश मारवाड़)

BHAIRODAN SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN,

Bikaner Rajputana.

J. B. Ry. (MARWAR)

प्रथमावृत्ति

वीर सम्वत् २४४७

विक्रम सम्वत् १९७७

ई० सन १९२१

१००० प्रत

कायाके कितने भेद हैं? छव हैं—गोत्र-पृथ्विकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनास्पतिकाय, त्रसकाय। नाम—इन्दीथावर काय, बंभीथावरकाय, सप्पीथावर काय, सुमतिथावर काय, पयावचथावर काय, जंगम काय।

पृथ्वी काय

माटी, हींगलु, हड़ताल, भोडल, भाटो, हीरा, पन्ना आद देइने सात लाख जात है, एक कांकरेमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, पृथ्विकायरो वर्ण पीलो है, स्वभाव कठोर है, संठाण मसुरकी दालरे आकार है, पृथ्वीकायको कुल १२ लाख क्रोड़ है, एक परजापतकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत है।

अपकाय

बरसादरोपाणी, ओसरोपाणी, गड़ारोपाणी, समुद्ररोपाणी धवररोपाणी, कुवा, बावड़ीरो पाणी, आद देइने सात लाख जात है, एक पाणीरी बुंदमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, एक पर्याप्तकी नेश्राय असंख्याता अपरजाप्त छे, अपकायरो वर्ण लाल है, स्वभाव ढीलो है, संठाण पाणीरे परपोटे माफक है उसको कुल ७ लाख क्रोड़ है।

तेउकाय

अगनि, भालरी अगनि, वीजलीरी अगनि, दांतगी अगनि उल्कापात आद देइने सात लाख जात है, एक अगनिरे तिणखा (पतंग) में असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, एक परजापतकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत है तेउकायरो वर्ण

बलप्राण, आउखो बलप्राण। प्राण किसको कहते हैं ? जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो और वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो, उनको प्राण कहते हैं।

७ सातमें बोले शरीर ५, उदारीक, वैक्रिय, आहारिक, तैजस, कारमण। उदारिक शरीर किसको कहते हैं ? मनुष्य, तिर्यंचके स्थूल शरीरको उदारिक शरीर कहते हैं, हाड़, मांस, लोही, राध इत्यादिकसे बना हुआ है, इसका स्वभाव गलना, सड़ना, विध्वंस (विनाश) पामनेका है।

वैक्रिय शरीर किसको कहते हैं ! जो छोटे, बड़े, एक, अनेक आदि नाना क्रियाओंको करे, ऐसे देव और नारकियोंके शरीरको वैक्रिय शरीर कहते हैं, अथवा सड़े नहीं, पड़े नहीं, विनाश पावे नहीं, बिगड़े नहीं, मलेका बाद कपूरकी माफक बिखर जाय उसको वैक्रिय शरीर कहते हैं।

आहारिक शरीर किसको कहते हैं ? छट्ठे गुणस्थानवर्ती मुनिके मस्तकमें यहां शङ्का होनेपर केवली या श्रुत केवलीके निकट जानेके लिये मस्तकमेंसे एक हाथका पुतला निकलता है, (यहां शङ्का पड़ी मुनिराज सन्देह करने ज्ञान भण्डा प्रमाद करनेसे ज्ञान विस्मरण हो गया यहां विचरता मनुष्य पूछने आवने उस पुतलेने उन दक्षण मुनिराजको उपयोग जानते नहीं इस वास्ते शरीर मालूम एक हाथका पुतला निकलता उस पुतलेका जहां तीर्थंकर महाराज व केवली महाराज होते हैं वैसे उसने तीर्थंकर महाराज व के

योगके कितने भेद हैं? पन्द्रह हैं—१ सत्यमनयोग २ असत्यमनयोग ३ मिश्रमनयोग (उभयमनोयोग) ४ व्यवहार मनयोग (अनुभयमनो योग) ५ सत्यभाषा ६ असत्य भाषा ७ मिश्रभाषा ८ व्यवहार भाषा ९ औदारिक १० औदारिकमिश्र ११ वैक्रियक १२ वैक्रियक मिश्र १३ आहारक १४ आहारकमिश्र १५ कार्माण।

९ नवमें बोले उपयोग १२ पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन: १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनः पर्ययज्ञान (मनपरजवज्ञान) ५ केवलज्ञान ६ मतिअज्ञान ७ श्रुत अज्ञान ८ विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान) ९ चक्षु दरसण १० अचक्षु दरसण ११ अवधि दरसण १२ केवल दरसण।

१० दसमें बोले कर्म आठ १ ज्ञानावर्ण २ दर्शनावर्ण ३ वेदनीय ४ मोहनीय ५ आयु ६ नाम ७ गोत्र ८ अंतराय। कर्म किसको कहते हैं? जीवके राग द्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माण वर्गणा रूप जो पुद्गलस्कंध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं, उनको कर्म कहते हैं।

११ इग्यारमे बोले गुणस्थान चवदे १ मिथ्यात्व २ सासादन (सास्वादान) ३ मिश्र ४ अविरतसम्यक्दृष्टी ५ देशविरत (देशव्रती) ६ प्रमत्तविरत (प्रमादी) ७ अप्रमत्तविरत (अप्रमादी) ८ अपूर्वकर्ण (नियतिबादर) ९ अनिवर्तिबादर (अनिवृत्तिकरण) १० सूक्ष्मसम्पराय ११ उपशांत मोहनीय १२ क्षीण मोहनीय १३ सयोगीकेवली १४ अयोगीकेवली।

शब्द ए ३ शुभ ३ अशुभ ए छव ; ६ ऊपर राग ६ ऊपर द्वेष ए बारा।

६० विकार चक्षुइन्द्रिके पांच विषयका ५, सचित्त ५, अचित्त ५ मिश्र ए १५ शुभ १५ अशुभ ये तीस ३० ऊपर राग ३० ऊपर द्वेष ए साठ।

१२ विकार घ्राणेन्द्रिके दोय विषयका; २ सचित्त २ अचित्त २ मिश्र ए छव, ६ ऊपर राग ६ ऊपर द्वेष ए बारा।

६० विकार रसइन्द्रिके पांच विषयका; ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० ऊपर राग ३० ऊपर द्वेष ए साठ।

९६ विकार फार्सेन्द्रिके आठ विषयका ८ सचित्त ८ अचित्त ८ मिश्र ए चोवीस, २४ शुभ २४ अशुभ ए अड़तालीस, ४८ ऊपर राग ४८ ऊपर द्वेष ए छन्नुं।

१३ तेरमें बोले मिथ्यातव १० और १५=२५ बोल (याने पच्चीस प्रकार)

१. अभिग्रह मिथ्यात्व ते पकड़े पकड्या सो सांचा, अर्थात् अपना ही मत सच्चा जाने।

२. अनाभिग्रह मिथ्यात्व ते हठग्राही तो नहीं, परन्तु सत्य असत्यका निर्णय नहीं कर सके, सब ही सही जाने।

३. अभिनिवेश मिथ्यात्व अपनी खोटी टेक छोड़े नहीं

४. संशय मिथ्यात्व जानाजान जिन मार्गे, संशय करे, निश्चय नहीं जाने. धर्म अहिंसा लक्षण है कि नहीं इत्यादिक

शब्द ए ३ शुभ ३ अशुभ ए छव ; ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारा।

६० विकार चक्षुइन्द्रिके पांच विषयका ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए १५ शुभ १५ अशुभ ये तीस ३० उपर राग ३० उपर द्वेष ए साठ।

१२ विकार घ्राणेंद्रिके दोय विषयका; २ सचित्त २ अचित्त २ मिश्र ए छव, ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारा।

६० विकार रसइन्द्रिके पांच विषयका; ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० उपर राग ३० उपर द्वेष ए साठ।

९६ विकार फरसेंन्द्रिके आठ विषयका ८ सचित्त ८ अचित्त ८ मिश्र ए चोवीस, २४ शुभ २४ अशुभ ए अडतालीस, ४८ उपर राग ४८ उपर द्वेष ए छनवे।

१३ तेरमें बोले मिथ्यातरा १० और १५=२५ बोल (याने पचीस प्रकार)

१. अभिग्रह मिथ्यात्व ते अपने ध्यानमें आवे सो सांचा, अर्थात् अपना ही मन मान्या माने।

२. अनाभिग्रह मिथ्यात्व ते हटग्राही ता नहीं. परन्तु सत्य असत्यका निर्णय नहीं कर सके. एक ही नहीं माने।

३. अभिनिवेश मिथ्यात्व अपणा लीवो टेक छोड़े नही

४. संशय मिथ्यात्व डामाडाल चित्त राखे, संशय करे, निश्चय नहीं लावे, धर्म अहिंसा लक्षण है कि नहीं इत्यादिक

जीवका चउदै भेद (संसारी जीवका १४ भेद)

सुक्ष्म एकेन्द्रिका	२	भेद	अप्रजापता.	प्रजापता,
बादर एकेन्द्रिका	"	"	"	"
बेन्द्रिका	"	"	"	"
तेन्द्रिका	"	"	"	"
चौन्द्रिका	"	"	"	"
असन्नी पंचेन्द्रिका	"	"	"	"
सन्नी पंचेन्द्रिका	"	"	"	"

अजीव तत्व ।

अजीव तत्व किसको कहिये ? चेतना रहित, सुख दुखको वेदे नहीं, प्रजा. प्राण, जोग, उपयोग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा, धर्मास्ति कायाका तीन भेद १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश। अधर्मास्ति कायाका तीन भेद १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश। आकास्ति कायाका तीन भेद, १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश ये नव, (१०) दसमो काल ये दस अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद १ खंधा २ खंधदेशा ३ खंध प्रदेशा ४ प्रमाणु पोगल्ला ये च्यार पुद्गलास्ति कायाका हुवा। एवं ये कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व ।

पुण्य तत्व किसको कहिये ? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बाधता दोहिलो, भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे

बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने ऊजला करे, पुण्य सोनाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा उसको पुण्य तत्त्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे।

१ आण पुण्ये (अन्न पुन्ने) – अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये—जगह स्थानक वगेरा देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगेरादेनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये —वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप आद देने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये —मुखसे शुभ वचन बोलनेसे, व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वयावच करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त जाणकर नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे (एक नो अड़तालीस प्रकृतिमें ने शुन शुभ)

वेदनीकी एक (शातावेदनी,) आयुष्यकी तीन, नामकी सैंतीस, गोत्रकी एक ये बयालीस।

पाप तत्व ।

पापतत्व किसको कहिये ? पाप बांधता सोहिलो, भोगतां दोहिलो, अशुभ योगसे बंधे, दुःखे २ भोगवे, पापका फल कडुवा, पाप प्राणीने मैलो करे, उसको पापतत्व कहिये। पाप अठारा प्रकारे बांधे।

१ प्रणातिपात—छव कायाके जीवोंकी हिंसा करे।

२ मृषावाद—असत्य (झूठ) बोले।

३ अदत्तादान—अणदिधी वस्तु लेवे (चोरी करे)

४ मैथुन—कुकर्म (कुशील) सेवे।

५ परिग्रह—द्रव्य (धन) राखे, ममता करे।

६ क्रोध—आप तपे दूसराने तपावे क्रोध करे।

७ मान—अहंकार (घमंड) करे।

८ माया—कपटाई दगाई करे।

९ लोभ—तृष्णा वधारे (मूर्छा गिर्धीपणो) राखे।

१० राग—स्नेह राखे प्रीति करे।

११ द्वेष—अणगमति वस्तु देखने द्वेष करे।

१२ कलह—क्लेश करे।

१३ अभ्याख्यान—(झूठा कलङ्क आल) देवे।

१४ पैशुन्य—दूसरेका चाडी चुगली करे।

१५ परपरिवाद—दूसराका अवगुणवाद बोले।

१६ रति अरति—पांच इन्द्रियोंके २३ विषय उसमेंसे मन-

गमतिसे राजी होवे। अणगमतिसे वीराजी (नाराजी) होवे।

१७ मायामोसो—कपट सहित झूट बोले, कपटाइमें कपटाइ करे।

१८ मिथ्यादर्शनशल्य—खोटी (झूटी) श्रद्धाको शल्य राखे।

बयांसी प्रकारे भोगवे, आठ कर्मके उदय (१४८ प्रकृतिमेंसे ८२ अशुभ २ भोगवे) ज्ञानावरणीयकी पांच, दर्शनावर्णीयकी नव, वेदनीयकी एक, मोहनीयकी छावीस (समकित, मिश्र टली) आयुष्यकी एक, नाम कर्मकी चोतीस, गोत्र कर्मकी एक, अन्तराय कर्मकी पांच ये बयांसी।

आश्रव तत्व।

आश्रव किसको कहिये? जीव रुपीयो तलाव, कर्म रुपीयो पाणी, पांच आश्रवद्वार रुप नाला (मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, जोग) करी भरे, उसको आश्रव तत्व कहिये। आश्रवका सामान्य प्रकारे वीस भेद।

१ मिथ्यात्व याने कुदेव, कुगुरु, कुधर्म, माने सो आश्रव।

२ अव्रत आश्रव याने व्रत पचखाण नहीं करे सो आश्रव।

३ प्रमाद याने पांच प्रमाद सेवे सो आश्रव।

४ कषाय याने पचीस कषाय सेवे सो आश्रव।

५ अशुभ जोग प्रवृतावे सो आश्रव।

६ प्रणातिपात जीवकी हिन्सा करे सो आश्रव।

७ मृषावाद झूट बोले सो आश्रव।

पाणी. आश्रव रूप नाले, संवरकी पाल करके (आवतां रूकांवे) ऐसे उसको संवर तत्त्व कहिये।

संवरका सामान्य प्रकारे बीस भेद।

१ समकित संवर।

२ व्रत पचखाण करे सो संवर।

३ अप्रमाद संवर।

४ अकषाय संवर।

५ शुभ जोग प्रवर्तावे सो संवर।

६ प्राणातिपात जीवकी हिंसा नहीं करे सो संवर।

७ मृषावाद—झूठ नहीं बोले सो संवर।

८ अदत्तादान—चोरी नहीं करे सो संवर।

९ मैथुन—कुशील नहीं सेवे सो संवर।

१० परिग्रह—ममता नहीं राखे सो संवर।

११ श्रोतइन्द्री—वश करे सो संवर।

१२ चक्षु इन्द्री—वश करे सो संवर।

१३ घ्राणेन्द्री—वश करे सो संवर।

१४ रस इन्द्री—वश करे सो संवर।

१५ स्पर्शेन्द्री—वश करे सो संवर।

१६ मन—वश करे सो संवर।

१७ वचन—वश करे सो संवर।

१८ काया—वश करे सो संवर।

१९ भंड—उपगरण जेणासे लेवे जेणासे मुके (रखे) सो संवर।

१० सझाय - वांचणी लेवै, प्रश्न पूछे, हृदयमें धारे धर्मकथा फरमावे इणरा भेद ५
११ ध्यान—चित्तको एकाग्रपणो " " ४८
१२ विउसग्ग—काउसग्ग इणरा भेद ८
कुल भेद ३५४

बंधतत्व।

बंध किसको कहते हैं? अनेक चीजोंमें एकपने का ज्ञान करानेवाले तथा आत्माके प्रदेश और कर्मके पुद्गल एकसाथ मिले, और नीरके माफिक व लोह पिण्ड अग्निके माफिक लोलिभूत होकर बंधे।

पाठान्तर।

जीव आठ कर्मसे बंध्यो हुवो है, जीव और कर्म लोलिभूत है, जैसे दूध और पानी लोलिभूत है, हँसराज पक्षीकी चोंच (चांच) खाटी है, दूधमें घाल्यां दुध न्यारो करदे पाणी न्यारो कर दे, उस माफिक जीव रूप हँसराज ज्ञान रूपी चोंच करके जीव जुदो करदे कर्म जुदा करदे।

बंधका च्यार भेद।

१ प्रकृतिबंध—आठ कर्मको स्वभाव।
२ स्थितिबंध—आठ कर्मकी स्थितिके कालका मान (प्रमाण)
३ अनुभागबंध- आठ कर्मको तीव्र मंदादि रस।
४ प्रदेशबंध—कर्म पुद्गल के दल आत्माके साथ बंधे वो।

दोय हाथकी उत्कृष्टी ५०० धनुष्यकी अवगाहना वाला जीव मोक्षमें जावे, ज० नव वर्षको उ० क्रोड पूर्वका आयुष्य वाला कर्म भूमिका होवे वो मोक्षमें जावे, मोक्ष याने सर्व कर्मसे आत्मा मुक्त हुवा, याने आत्मा अरुपी भावको प्राप्त हुवा, कर्मसे न्यारा हुवा, एक समयमें लोकके अग्रभागमें पहोंच्या, वहाँ अलोकसें अड़करके रहा पण अलोकमें जायसके नहीं क्योंकि वहां धर्मास्तिकाय नहीं, (याने धरमास्तीकायको साज नहीं) उससे वहां स्थिर रहा, दुजे समे अचल गतिको प्राप्त होवे, कोई चलत वहांसे चवे नहीं, हाले चाले नहीं, अजर, अमर, अविनाशी पदको प्राप्त होवे, अनंत सुखकी लहेरमें सर्दाकाल निमग्नपणे रेवे।

पाठान्तर।

मोक्षका नव द्वार १ छता पदकी परुपणा २ द्रव्य परिमाण ३ क्षेत्र परिमाण ४ स्पर्शना परिमाण ५ काल ६ अन्तर ७ भाग ८ भाव ९ अल्पबहुत्व।

१ सत्पद परुपणा—मोक्ष छती है, मोक्षमें जीव जावे, मोक्ष दस बोल करके शास्वति है।

१ गत—च्यार गतिमें से मनुष्य गतिमे मोक्ष है, तीनसे नहीं।

२ इन्द्रीय—पंचेन्द्रीसे मोक्ष है, च्यारसे नहीं।

३ काय—छव कायमेंसे त्रस कायको मोक्ष है, पांच कायको नहीं।

४ भव्य—भवी जीवको मोक्ष है, अभवी जीवको मोक्ष नहीं।

५ सन्नीसें मोक्ष है, असन्नीसें मोक्ष नहीं।

काल द्रव्यका पांच भेद

१ द्रव्यथकी, अनन्ता द्रव्य २ क्षेत्र थकी, अढाई द्वीप प्रमाणे ३ कालथकी, आद्अन्त रहित ४ भावथकी, अरुपी, वर्ण नहीं, गन्धनहीं, रसनहीं. स्पर्श नहीं ५ गुणथकी, वर्तन गुण नयाने जुनो करे जुनाने खपावे कपड़े कैचीरो दृष्टान्त।

जीवास्ति कायका पांच भेद

१ द्रव्य थकी, जीव अनन्ता २ क्षेत्र थकी, आखा लोक प्रमाणे ३ काल थकी, आद्अन्त रहित ४ भाव थकी, अरुपी, वर्ण नहीं, गन्ध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं ५ गुण थकी, चेतना गुण चन्द्रमारीकलारो दृष्टान्त।

पुद्गलास्तिकायका पांच भेद

१ द्रव्य थकी पुद्गल अनन्ता २ क्षेत्र थकी, आखालोक प्रमाणे ३ कालथकी, आद्अन्त रहीत ४ भाव थका, रुपी, वर्ण है. गन्ध है, रस है, स्पर्श है, ५ गुण थकी, पुर्ण गलन सड़न वीद्धंसण गुण बादलाको दृष्टान्त जैसे मिले और बिखरे।

छट द्रव्य छत्र।

१ जीव द्रव्य किनको कहते है ?

जिसमें चेतना गुण पाया जाय, उसको जीवद्रव्य कहते है।

जीव द्रव्य कितने और कहां है ?

जीवद्रव्य अनन्तानन्त है और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए है।

लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है ?

मोक्ष जानेसे पहिले समुद्घात करनेवाला जीव लोकाकाशके बराबर होता है।

अलोकाकाश।

अलोकाकाश किसको कहते हैं ?

लोकसे बाहरके आकाशको अलोकाकाश कहते हैं।

लोक।

लोककी मोटाई, ऊँचाई, चौड़ाई कितनी है ?

लोककी मोटाई उत्तर और दक्षिण दिशामें सब जगह सात राजू है, चौड़ाई पूर्व और पश्चिम दिशामें मूलमें (नीचे जड़में) सात राजू है। ऊपर क्रमसे घटकर सात राजूकी ऊंचाईपर चौड़ाई एक राजू है। फिर क्रमसे बढ़कर साढ़े दश राजूकी ऊंचाईपर चौड़ाई पांच राजू है। फिर क्रमसे घटकर चौदह राजूकी ऊँचाईपर एक राजू चौड़ाई है और ऊर्ध्व और अधोदिशामें ऊँचाई चौदह राजू है।

११ द्वार।

छव (षट) द्रव्यपर कर्मग्रन्थमें इग्यारा द्वार चले सो कहते हैं।

इग्यारा द्वारका नाम (१) प्रणामी (२) जीव (३) मुत्ता (मूर्ति) (४) सपएसा (सर्व प्रदेशी) (५) ऐगा (एक) (६) खित्ते (क्षेत्र) (७) क्रिया (८) णिच्च (नित्य) (९) कारण (१०) कर्त्ता (११) सव्व गइ इयर पवेसा (सर्व गति)

(६) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण है, जीव पांचोंके अकारण है (जीव द्रव्य अकारण, बाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण, एक जीव द्रव्य कारणपण संभावे छे।

(१०) कर्ता कहेता निश्चय में छव ही द्रव्य आने २ स्वरूपका करता है, व्यवहारमें जीवद्रव्य कर्ता है, पांच द्रव्य अकर्ता है।

(११) सव्व गई इयर पवेसा कहता आकास्तिकाय तो सर्व गति ५ द्रव्य असर्व गति; आकास्तिकाय रे भांजनमें पांच द्रव्य समावे (आकाश द्रव्य सर्व दूर व्याप रहा है और पांच द्रव्ने आकाश रुप भांजनमें प्रवेश किया है)

२१ इकीसवें थोके रास दोय जीव रास, अजीव रास।

संसारी जीवका विशेष प्रकारें ५६३ भेद है।

नारकीका	१४	भेद	
तिर्यंचका	४८	,,	
मनुष्यका	३०३	,,	
देवताका	१९८	,,	ए पांच सोहतेसट भेद हुवा।

उसका विस्तार कहुंछु

नारकीका चउदे भेद।

७ नारकीका अपजापता और परजापता ए चउदे।

नारकीका नाम और गोत्र।

चौइन्द्रिका	दोय	भेद	अपजापता,	परजापता
असन्नी (समोछन) जलचरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी (गर्भेज) जलचर का	,,	,,	,,	,,
असन्नी थलचरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,
असन्नी उरपुरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,
असन्नी भुजपुरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,
असन्नी खेचरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,

तिर्यंच पंचेन्द्री

जलचर, केनेकहीये ? जो जलमें चले उसको जलचरकेहीजे जैसे मच्छ, कच्छ, मगर मच्छ, काछवा, डेडका इत्यादिक इन की कुल १२॥ लाखकोड़ है।

थलचर, केने कहिये ? जो जमीन उपर चाले उसको थलचर कहिये इनका च्यार भेद।

एक खुरा—घोड़ा, गधा, खचर इत्यादिक।

दोय खुरा—ऊंठ, गाय, भैंस, बलद, बकरा, हरन, ससीया इत्यादिक।

गंडी पद (गण्डीपया: हाथी, गेंडा इत्यादिक।

कागला, मैना, सुवा, मोरड़, बुगला कोयल, चील, इत्यादि, तीतर, बाज इत्यादिक ये अढ़ाइ द्विप मांहिला बाहीर होनु ठीकाणे है।

३ समदुग पंखी (समुग) इनकी पांख डाबा माफक बीडीही रेवे ये पंखी अढ़ाइ द्वीप बहार है।

४ बीतत पंखी इनकी पांख सदाइ फाटयोड़ी रेवे ये पंखी अढ़ाइ द्वीप बाहार है: इनका कुल १२ लाख क्रोड है।

मनुष्यका ३०३ भेद।

(१५) पनरा कर्मभूमि (३०) तीस अकर्मभूमि (५६) छप्पन अन्तरद्वीपा ये १०१ गर्भज मनुष्यका पर्याप्ता १०१ (इनका) अपर्याप्ता ये २०२।

व १०१ समुर्छिम मनुष्यका अपर्याप्ता ये ३०३ हुवा।

गर्भज मनुष्यको विस्तार।

१५ कर्मभूमि—५ भरत ५ ईरवत ५ महाविदेह ये पनरे कर्म भूमि मनुष्यका क्षेत्र किहां? एक लाख जोजनको जम्बूद्वीप है, उसमेंसे १ भरत १ इरवरत १ महाविदेह ये ३ जम्बूद्वीपमें है; उसके चारों तरफ दोय लाख जोजनका लवण समुद्र है. उसके चारों तरफ च्यार लाख जोजनको धातकी खंड है, उसमें २ भरत २ इरवरत २ महाविदेहये छव क्षेत्र है; उसके चारों तरफ (घेरकर) आठ लाख जोजनको कालो दधी समुद्र है: उसके चौतरफ आठ लाख जोजनको अर्ध पुष्कर द्वीप है, उसमें २ भरत २ इर

नहीं, साधु साध्वीसे व्यवहार नहीं ६३ सलाका पुरुष रहित, (२४ तिर्थंकर १२ चक्रवर्त ९ बलदेव ९ वासुदेव ९ प्रति वासुदेव) विहरमान, गणधर विगेरह करके रहित, असस्सी नहीं, मसस्सी नहीं, कसस्सी नहीं; जुगलको दस प्रकारका कल्प वृक्ष आशा पूर्ण करे उनके नाम. मतंगाय भिंगा तुडियंगा, दिव जोई चित्तंगा, चित्तरसा मणवेगा, गिहगारा आणीयं-गणाउ ॥१॥

(१) मतंगाय कहेता मधु, मणिरस, सुगंधादिक पाणीका दातार।

(२) भिंगा कहेता अनेक प्रकारका रत्न जडित भाजनका दातार।

(३) तुडियंगा कहेता ४९ उगणपचास प्रकारका वाजित्र, नाटक-का दातार।

(४) दिव कहेता रत्नजडावका दिवांके दातार।

(५) जोई कहेता सूर्यकी ज्योति समान ज्योतीके दातार।

(६) चित्तंगा कहेता चित्राम सहित फूलकी मालाका दातार।

(७) चित्तरसा कहेता चित्तने गमेएसा अनेक प्रकारका भोजना दिकका दातार।

(८) मणवेगा कहेता रत्न जडतका आभुषण (गहणा)का दातार।

(९) गीहगारा कहेता (४२) वयांलीस भोमिया महेलका दातार।

(१०) अणियगणाउ कहेता अनेक जातका रत्न जडतका नाकरे वायरासे उडे ऐसा वस्त्रका दातार।

(५) उवट्टण विहं दे० मर्दन करनेकी वस्तु पीठी प्रमुख।

(६) मंजण विहं दे० स्नान करनेका पाणी प्रमुख।

(७) वत्थ विहं दे० वस्त्र, कपड़ा।

(८) विलेवण विहं दे० चन्दनादिक।

(९) पुप्फ विहं दे० फूल।

(१०) आभरण विहं दे० गहणा, दागीना।

(११) धूप विहं दे० धूप।

(१२) पेज विहं दे० उकाली हुवा वगेरा पीनेकी वस्तु।

(१३) भक्खण विहं दे० सुखड़ी (पक्वान, मिठाई वगेरा मेवो)।

(१४) ओदण विहं दे० रांधी हुई दाल।

(१५) सूप विहं दे० चावल (भात)।

(१६) विगय विहं दे० घी तेल, दूध, दही, मीठो (गुड़, खांड, शक्कर, मिश्री वगेरे)।

(१७) साग विहं दे० लीलोतरीका तथा हरा साग।

(१८) माहुर विहं दे० मीठा फल।

(१९) जीमण विहं दे० जो वस्तु जीमणमें आवे उसको खिचड़ी, रोटी।

(२०) पाणी विहं दे० पाणी।

(२१) मुखवास विहं दे० सुपारी, लौंग, इलायची, वगेरह मुख वास करनेकी वस्तु।

(२२) वाहण विहं (सवारी) दे० चलने फिरनेके वास्ते सवारी प्रमुख।

(५) उवट्टन विहि के० मर्द्दन करनेकी वस्तु पीठी प्रमुख।

(६) मज्जन विहि के० स्नान करनेका पानी प्रमुख।

(७) वत्थ विहि के० वस्त्र, कपड़ा।

(८) विलेवन विहि के० चन्दनादिक।

(९) पुप्फ विहि के० फूल।

(१०) आभरण विहि के० गहना, दागीना।

(११) धूप विहि के० धूप।

(१२) पेज विहि के० उकाली हुवा पीनेकी वस्तु।

(१३) भक्खन विहि के० सुखड़ी (पक्वान्न मिठाई प्रमुख मेवो)।

(१४) ओदन विहि के० रांधो हुई कूर।

(१५) सूप विहि के० सालन (दाल)।

(१६) विगय विहि के० घी तेल, दूध, दही, मीठो (गुड़, खांड, सक्कर, मिश्री वगैरे)।

(१७) साग विहि के० सोन्धिशाका पत्र रूप साग।

(१८) माहुर विहि के० केला फल।

(१९) जीमन विहि के० जो वस्तु जीमनेमें आवे उसकी विधि, गिनती।

(२०) पाणी विहि के० पानी।

(२१) मुखवास विहि के० सुपारी, लौंग, इलायची, वगैरह मुख साफ करनेकी वस्तु।

(२२) वाहणि विहि (पन्नी) के० पगमे पेरनेकी जूतीका पगरखी प्रमुख।

(२२) आंक एक बावीस को, भांगा उपजे नव, दोय करण दोय जोगसे कहेना, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, मनसा, वायसा २ करूं नहीं, कराउं नहीं, मनसा, कायसा ३ करूं नहीं, कराउं नहीं, वायसा, कायसा ४ करूं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, वायसा ५ करूं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, कायसा ६ करूं नहीं, अनमोदुं नहीं, वायसा, कायसा ७ कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, वायसा ८ कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, कायसा ९ कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, वायसा, कायसा ।

(२३) आंक एक तेवीस को, भांगा उपजे तीन, दोय करण, तीन जोगसे कहेना, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा २ करूं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा, ३ कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा ।

(३१) आंक एक इकतीस को, भांगा उपजे तीन; तीन करण, एक जोगसे कहेना, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा २ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं वायसा ३ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं कायसा ।

(३२) आंक एक बत्तीस को, भांगा उपजे तीन, तीन करण, दोय जोगसे कहेना, १ करूं नहीं कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा वायसा २ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, कायसा ३ करूं नहीं, कराउं नहीं अनमोदुं नहीं, वायसा, कायसा ।

(३३) आंक एक तेतीस को, भांगो उपजे एक; तीन करण, तीन जोगसे कहेना, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदुं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा ।

अवलोकनको केवल दर्शन कहते हैं।

१५ नाण (ज्ञान) किसको कहते हैं? किसी विवक्षित पदार्थको उसके विशेष पदार्थको विषय करने वाले ज्ञानको ज्ञान कहते हैं। उसके पांच भेद हैं।

१ मतिज्ञान=इन्द्रिय और मनकी सहायतासे जो ज्ञान हो उसको मतिज्ञान कहते हैं।

२ श्रुतज्ञान=मतिज्ञानसे जानेहुवे पदार्थसे सम्बन्ध लिये हुवे किसी दूसरे पदार्थके ज्ञानको श्रुतज्ञान कहते हैं जैसे—"घट" शब्द सुननेके अनन्तर उत्पन्न हुवा कंबुग्रीवादि रूप घटका ज्ञान।

३ अवधिज्ञान=द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादा लिये जो रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने।

४ मनः पर्यय ज्ञान=द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादा को लिये हुवे जो दूसरेके मनमें तिष्ठते (ठहरे) हुवे रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने।

५ केवल ज्ञान=जो त्रिकालवर्ती अनन्त पदार्थोंको युगपत् (एक साथ) स्पष्ट जाने।

१६ अज्ञान=तीन।

१७ जोग=तेरे।

१८ उपयोग=बारे।

१९ आहार अहारे=आहार लेवे उत्कृष्ट तीन दिनके उपरान्त छः दिशिकां।

मुं सर्वार्थ सिद्धतक जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग उत्कृष्टो न्यारी न्यारी ।

तीजे, चोथे देवलोकरी ६ हाथरी ।

पांचवें, छट्ठे " ५ "

सातवे, आठवें " ४ "

नवमेंसुं बारमे " ३ "

नवग्रीवेकरी २ हाथरी ।

४ अनुतर विमाणरी १ हाथरी ।

सर्वार्थ सिद्धरी मुंडे हाथरी ।

उतर वेक्रे करे तो जघन्य अंगुलरे संख्यातमें भाग उत्कृष्टो बारमें देवलोक तक लाख जोजनरी नवग्रीवेक, अनुतर विमाणरा देवता वेक्रे करे नहीं ।

च्यार स्थावर तथा असन्नी मनुष्यरी जघन्य उत्कृष्टो अंगुलरे असंख्यातमें भाग वनास्पतीरी जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग उत्कृष्टी १००० जोजन झाझेरी कमल (कवलके फूल) की अपेक्षा ।

बेन्द्रीरी जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग उत्कृष्टी १२जोजनरी

तेन्द्रीरी " " " " " ३ कोसरी

(गउरी)

चोन्द्रीरी " " " " " ४ कोसरी

तिर्यंच पचेन्द्रीरी जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग, उत्कृष्टी:— सन्नी जलचररी १००० जोजनरी, असन्नी जलचररी १००० जोजनरी ।

४ हाथ १६ अंगुलरी, उत्कृष्टी ३३३ धनुष ३२ अंगुलरी।

शरीर—नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीक, च्यार स्थावर, तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, तीस अकर्मा भूमि, छप्पन अंतर द्वीपामें शरीर पावे तीन (उदारीक, तेजस, कारमाण)

वाउकाय, सन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्रीमें शरीर पावे च्यार (उदारीक, वैक्र, तेजस, कारमाण) गर्भज मनुष्यमें शरीर पावे पांचुं ही, सिद्धांमें शरीर पावे नहीं।

संघयण-नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीकमें संघयण पावे नहीं, पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्रीमें संघयण पावे [illegible] छेवठो; गर्भज तिर्यंच, गर्भज मनुष्यमें संघयण पावे छउं ही, युगलीयामें संघयण पावे एक वज्रऋषभ नाराच संहनन; सिद्धामें संहनन पावे नहीं।

संठाण—नारकी, पांच स्थावर तीन विकलेन्द्री, [illegible] असन्नी मनुष्यमें संठाण पावे एक हुंडक [illegible] वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीक, [illegible] अन्तर द्वीप, [illegible] [illegible] समचउरस्र, गर्भज मनुष्य गर्भज [illegible] पावे छउं ही, सिद्धामें संठाण [illegible]

कषाय—[illegible] [illegible] कषाय पावे ४ [illegible]

[illegible] कषाय पावे ४ [illegible]

इन्द्री—नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी विमाणीक, गर्भजतिर्यंच पञ्चेन्द्री, असन्नी मनुष्यमें इन्द्री पावे पांचुंही; पांच स्थावरमें इन्द्री पावे एक स्फर्शेन्द्री, बेन्द्रीमें इन्द्री पावे दोय (स्फर्शेन्द्री, रसेन्द्री) तेन्द्रीमें इन्द्री पावे तीन (स्फर्शेन्द्री, रसेन्द्री, घ्राणेन्द्री) चोन्द्रीमें इन्द्री पावे च्यार (स्फर्शेन्द्री, रसेन्द्री, घ्राणेन्द्री, चक्षु इन्द्री) गर्भज मनुष्य सइन्द्रीया होय तो इन्द्री पावे पांचुं ही, अनिन्द्रीया होयतो इन्द्री पावे नहीं (तेरमे, चवदमें गुणठाणे वालरो) सिद्ध अनिन्द्रीया सिद्धांके इन्द्री होय नहीं।

समुदघात ७ (१ वेदनी २ कषाय ३ मरणांतिक ४ वैक्रे ५ तेजस ६ आहारिक ७ केवली) ७ नारकी, तथा वायु कायमें समुदघात पावे ४ पेलड़ी; भवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी, पहिले देवलोकसुं बारमें देवलोकरा देवता, तथा सन्नी तिर्यंचमें समुदघात पावे ५ पेलड़ी; ४ स्थावर ३ विकल इन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच, युगलीया, नवग्रीवेक, पांच अनुतर विमाणरा देवतामें समुदघात पावे ३ पेलड़ी, सन्नी (गर्भज) मनुष्यमें समुदघात पावे ७ (सातोंहीं) केवलयांमें १ केवल समुदघात; तिर्थंकर समुदघात करे नहीं, सिद्धामें समुदघात नहीं।

सन्नी—(मन होय सो सन्नी) असन्नी (मन नहीं होय सो असन्नी) ७ नारकी, भवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी विमाणीक, गर्भज तिर्यंच, युगलीया सन्नी; (पेलीनारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, पहेले, दुजे देवलोकमें सन्नी असन्नी दोनुं उपजे) ५ स्थावर, ३ विकल इन्द्री समुछम तिर्यंच

मिथ्यादृष्टी) पांच अनुत्तर विमाणरे देवता, सिद्धांमें दृष्टी पावे एक सम दृष्टी।

दर्शण-नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीक, गर्भेज तिर्यंचमें दरसण पावे तीन (चक्षु, अचक्षु, अवधि) पांच स्थावर, बेन्द्री, तेन्द्री, असन्नी मनुष्यमें दर्शन पावे एक अचक्षु ; चोन्द्री, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्री, तीस अकर्मा भूमी, छप्पन अन्तर द्वीपमें दर्शन पावे दोय (चक्षु, अचक्षु) गर्भेज मनुष्यमें दर्शन पावे च्यारूं ही ; सिद्धांमें दर्शन पावे एक केवल।

नाण-नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, जोतषी, विमाणीक, गर्भेज तिर्यंचमें ज्ञान पावे तीन (मति, स्रुति, अवधि) गर्भेज मनुष्यमें ज्ञान पावे पांचुं ही ; पांच स्थावर, असन्नी मनुष्य, छप्पन अन्तर द्विपमें ज्ञान पावे नहीं ; तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्री, तीस अकर्मा भूमीमें ज्ञान पावे दोय (मति स्रुति) सिद्धांमें ज्ञान पावे एक केवल।

अनाण-नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, पहिले देवलोकसुं नवग्रीवेक तांइ, गर्भेज तिर्यंच पञ्चेन्द्री, गर्भेज मनुष्यमें अज्ञान पावे तीनुंही ; पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्री, तीस अकर्मा भूमी, छप्पन अन्तर द्विपमें अज्ञान पावे दोय (मति, स्रुति) पांच [illegible] में, सिद्धांमें अज्ञान पावे नहीं।

जोग-नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतषी, विमाणीकमें जोग पावे इग्यारे (च्यार मनका, च्यार वचनका, [illegible]

आहार—१८ दंडकरा जीव आहार लेवे छउ' दिसीरो. ५ थावर आहार लेवे व्याघात आसरी सिये तीन दिसीरो, सिये च्यार दिसीरो, सिये पांच दिसीरो ; अव्याघात आसरी छउ' दीसीरो; मनुष्य आहारिक होय अणारीक होय (आहारीक-आहार लेवे छउ' दिसीरो) (अणारीक—केवली समुद्घातरे तीजे, चोथे, पांचमें समे, अथवा चवदमें गुणठाणे') सिद्ध अणारीक (आहार लेवे नहीं)

उवट्ट- नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, पहिले देवलोकसु आठमें देवलोक तांइ, तीन विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंचनें सन्नी तिर्यंचमे एक समेमें १—२—३ जाव संख्याता, असंख्याता उपजे ; च्यार स्थावरमें समे समे असंख्याता उपजे; वनास्पतिमें सठाणे आसरी (वनास्पती आसरी समे समें अनंता उपजे, परठाणे आसरी (दूसरे ठोकाणे आसरी) समे समे असंख्याता उपजे ; नवमें देवलोकसु सर्वार्थ सिद्ध तांइ गर्भज मनुष्यमें, तीस अकर्मा भूमी, छपन अन्तर द्वीपामें एक समे में १—२-३ जाव संख्याता उपजे सिद्धांमें एक समेमें १-२-३ जाव १०८ उपजे।

इकवीसमो स्थिति द्वार ।

नारकी की स्थिति ।

१ पहली नारकीकी स्थिति ज० दस हजार वर्षकी उ० १ सागरकी
२ दूसरी नारकीकी स्थिति ज० १ सागरकी उ० ३ सागरकी

(१४) सामायिकमें घणे जोरसें दुसरेकुं दुखे वेसा बोले तो दोष।

(१५) सामायिकमें कलह करे तो दोष।

(१६) सामायिकमें च्यार प्रकारकी विकथा करे तो दोष।

(१७) सामायिकमें हांसी, मशकरी, ठट्ठा करे तो दोष।

(१८) सामायिकमें गड़बड़ करके उन्तावलो उन्तावलो अशुद्ध बोले, पढे, गुणे तो दोष।

(१९) सामायिकमें अयोग्य वचन, अयुक्ति भाषा बोले तो दोष।

(२०) सामायिकमें अव्रतीको सत्कार, सन्मान देवे (अव्रतीने आवो, पधारो कहे) तो दोष।

१२ कायारा दोषः—

(२१) सामायिकमें अजोग आसणसें वेठे जैसे कि ठासणी मारीने, पांव पर पांव रखीने, एसा अभिमानका आसण बेठे तो दोष।

(२२) सामायिकमें अथिर आसण बेठ तो दोष।

(२३) सामायिकमें विषय सहित दृष्टी जोवे तो दोष।

(२४) सामायिकमें सावद्य तथा घरका काम करे तो दोष।

(२५) सामायिकमें विना कारण ओठो लेकर तथा दुसरेको आधार लेकर वेठे तो दोष।

(२६) सामायिकमें अंग शरीर मोडे तो दोष।

(२७) सामायिकमें शरीर वारंवार संकोचे या पसारे तो दोष।

॥ अथ सामायिकके ३२ दोष लिख्यते ॥

१० मनके दोष:—

(१) बिना अवसरसे तथा अविवेकसे सामायिक करे तो दोष।
(२) यश कीर्ति अर्थे सामायिक करे तो दोष।
(३) धनादि लाभ अर्थे सामायिक करे तो दोष।
(४) गर्व (अहंकार) सहित सामायिक करे तो दोष।
(५) डरसे, भयसे पूजता सामायिक करे तो दोष।
(६) संशय सहित फल की संदेह लाकर सामायिक करे तो दोष।
(७) सामायिकमें नियाणा करे तो दोष।
(८) सामायिकमें गुस्सा, रोष, क्रोध करे तो दोष।
(९) सामायिकमें देवगुरु धर्म इत्यादिकी अविनय, असातना करे तो दोष।
(१०) बेगारकी तरह सामायिक करे तो दोष।

१० वचनके दोष:—

(११) सामायिकमें कुवचन बोले तो दोष।
(१२) सामायिकमें बिना विचारे वचन बोले तो दोष।
(१३) सामायिकमें संसार, संबंध, व्यापार, इत्यादि संबंधी [illegible] [illegible] करे तो दोष।

॥ दोहा ॥

निवासी बीकानेरका, जैन श्वेताम्बर जान।
औसवंशमें सेठीया, हूं श्रावक भेरोदान ॥
बहु ग्रंथ संचे किया, अल्प बुद्धि अनुसार।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजो विद्वन सुधार ॥

ॐ

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

सेवंभंते सेवंभंते गोतम वाले सही श्री महावीरकि वचनमें कुछ सन्देह नहीं। जैसा लिखा हुवा देख्या, वांच्या वा सुण्या वैसा ही अल्प बुद्धिकि अनुसार लिखा , तत्व केवली गम्य अक्षर, पद, ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिंडी, ओछो अधिको, आगो पाछो, अशुद्ध पणे लिख्यो होय अथवा कोई तरहकी छपानिमें ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, अजाणते कोई दोष लाग्या होय तो सकल श्री संघकि साखसे मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कड़ं मोय।

* इति पहिला भाग समाप्तम् *

[illegible]

श्री जैन [illegible] विद्यालय

[illegible]

[illegible]

बीकानेर [illegible]

THE JAIN [illegible] SEMINARY

[illegible] Building [illegible]

Bikaner [illegible] Marwar